सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-33 अंक-13 | 7 से 21 जुलाई, 2018 | मुख्य संपादक कॉमरेड प्रभास घोष | कुल पृष्ठ 8 | मूल्य : 2 रुपये

जिनेवा में आईएलओ के अंतर्राष्ट्रीय श्रम सम्मेलन के 107 वें सत्र में

एआईयूटीयूसी के महासचिव कॉमरेड शंकर साहा ने की शिरकत

एसयूसीआई (सी) के केंद्रीय कमेटी सदस्य और एआईयूटीयूसी के महासचिव कॉमरेड शंकर साहा ने 28 मई और 8 जून, 2018 के बीच जिनेवा में हुए आईएलओ के अंतर्राष्ट्रीय श्रम सम्मेलन के 107वें सत्र में भारतीय प्रतिनिधिमंडल के श्रमिक प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया। उन्हें दुनिया भर के कामकाजी लोगों की सामाजिक सुरक्षा के पहलू पर मानक समिति की आम सभा में विचार-विमर्श करने का मौका मिला।

विचार-विमर्श शुरू करने के बाद, कॉमरेड साहा शोचनीय वैश्विक नौकरी संकट पर गहरा रोष व्यक्त करने में स्पष्टवादी थे। वैश्विक बेरोजगारी परिदृश्य का विस्तार से खुलासा करते हुए उन्होंने यह भी कहा कि अनुमान लगाया गया है कि लगभग 21 करोड़ लोग बेरोजगार हैं, इनके अलावा सैकड़ों लाख लोग व्यवहार्य गरीबी में हैं जिन्हें बेरोजगार कहा जा सकता है। हालांकि इसमें असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों की बहुत बड़ी संख्या को गिनती में नहीं लिया है जो श्रम शक्ति के बहुसंख्यक श्रमिक बैठते हैं।

लाखों प्रतिष्ठानों में मनमाने तौर पर छंटनी, ले-ऑफ, तालाबंदी, प्रतिष्ठानबंदी और कर्मचारियों की संख्या में तेजी से कमी (डाउनसाइजिंग) के तरीके से नौकरी की बढ़ती असुरक्षा और बढ़ती बेरोजगारी ने लोगों को विनाशकारी स्थिति में धकेल दिया है। इस प्रकार उन्हें बड़ी परेशानी और निराशा-हताशा से बड़ी संख्या में आत्महत्या करने के लिए भी मजबूर किया जाता है। तथाकथित सुधारों के नाम पर मौजूदा सदियों पुराने श्रम कानूनों में संशोधन कर मजदूर-विरोधी बर्बर संशोधनों के आक्रामक कार्यान्वयन ने नौकरी की असुरक्षा को और बढ़ा दिया है और मजदूरों के कष्टों से अर्जित उनके अधिकार और विशेषाधिकार छीन लिये हैं।

आउटसोर्सिंग, ठेकेदारीकरण, स्थायी रोजगार के स्थान पर कैज्यूअल मजदूरों का नौकरी पर रखना तेजी से बढ़ रहा है। भारत में, औद्योगिक रोजगार (स्थायी आदेश) अधि नियम, 1946 में 'फिक्स्ड टर्म एम्प्लॉयमेंट' के प्रावधान का हाल ही नया जोड़ा जाना मेहनतकश लोगों पर कहर ढाहने के लिए काफी होगा। इन सभी उपायों ने मजदूरों के रोजगार व सेवा शर्तों का निपटारा सामूहिक ढंग से करने की सदियों पुरानी लोकतांत्रिक व्यवस्था को खतरे में डाल दिया है। इसके विपरीत व्यक्तिगत कर्मचारी अब रोजगार व सेवा की व्यक्तिगत शर्त के अधीन है। ये बहुत बेकार उपाय सामूहिक सौदेबाजी करने की प्रणाली को कमजोर कर रहे हैं और इसके परिणामस्वरूप ट्रेड यूनियन संगठनों की भूमिका को कम कर रहे हैं, जिससे श्रमिकों को 'हायर एण्ड फायर' (जब चाहा लगाया और जब चाहा हटा दिया) के लिए नियोक्ताओं को अधिकतम मुनाफा सुनिश्चित करने के लिए निरंकुश अधिकार प्रदान किया जा रहा है।

बंधुआ मजदूरी की समस्या हमारे समाज के लिए एक बहुत बड़ा खतरा है। अनुमान के मुताबिक, दुनिया भर में 2.5 करोड़ लोग बर्बर युग जैसी उजरती गुलामी के आधुनिक रूप, बंधुआ मजदूरी करने में लगे हुए हैं। इन आर्थिक और सामाजिक तौर पर इन दीन-दुखियों के विशाल बहुमत का बड़े-बड़े कॉर्पोरेट दिग्गजों सहित निजी उद्यमों द्वारा क्रूरता से शोषण किया जाता है, जो अवैध लाभ के रूप में 150 अरब अमेरिकी डॉलर प्रति वर्ष कमाते हैं।

प्रवासी श्रमिकों की हालत खतरे का बिगुल बजाने वाली है। वैश्विक स्तर पर यह अनुमान है कि लगभग 22.5 लाख इस तरह के श्रमिक हैं जिनमें करीब 50 प्रतिशत महिलाएं हैं, इनमें से ज्यादातर श्रमिक आर्थिक रूप से बदहाल वर्गों से हैं। उनकी काम करने की परिस्थितियां गंभीर रूप से अपमानजनक हैं और ये अमानवीय शोषण के अधीन है। उन्हें अत्यधिक कम और बिना किसी गारण्टी वाले पारिश्रमिक के साथ बंधुआ मजदूर के रूप में वर्णित किया जा सकता है जिनके न तो जीवन की कोई सुरक्षा और बचाव है, न ही सामाजिक सुरक्षा का कोई प्रावधान है। वे संगठिन होने के अधिकारों और ट्रेड यूनियन अधिकारों की आजादी से भी वंचित हैं। इराक के मोसुल में 39 प्रवासी भारतीय निर्माण श्रमिकों के अपहरण और नृशंस हत्या का हालिया काण्ड असहाय प्रवासी श्रमिकों की असुरक्षित स्थिति का एक दुखद उदाहरण है।

मेहनतकश लोगों की स्वास्थ्य देखभाल, उनके बच्चों को शिक्षा राज्यों की मूल जिम्मेदारी बनती है। लेकिन सामाजिक दायित्व निभाने की बजाय सुरक्षा और बचाव के विभिन्न मामलों में राज्यों की ओर से गंभीर लापरवाही साफ प्रदर्शित होती है, यहां तक कि व्यावसायिक खतरों के संबंध में कानूनी रूप से बाध्यकारी पहलुओं को भी लागू करने से इनकार किया जा रहा है। दुनिया भर में भूख, गरीबी, घोर कुपोषण, अल्प पोषण, उचित स्वच्छता की अनुपस्थिति, मजदूरों और उनके परिवारों को सताने वाली रोकथाम योग्य बीमारियां और पानी का बड़े पैमाने पर प्रदूषण का बड़ा भारी खामियाजा मेहनतकश आबादी को भरना पड़ रहा है जो आये साल उनकी बदहाली और कंगाली का सबब बन रहा है। इस उदासीन रवैये की पुष्टि इस रिपोर्ट से और भी हो जाएगी कि जानलेवा भयानक कैंसर (कार्सिनोमा) से लड़ने के लिए अनुसंधान और जांच-परख संबंधी अध्ययन करने में जहां 2014 में दुनिया भर में किया गया कुल खर्च 100 अरब अमेरिकी डॉलर था, वहीं सैन्य साजोसामान-हथियारों के मामले में कुल खर्च 1739 अरब अमेरिकी डॉलर था। यह मजदूरों के प्रति घोर लापरवाही को सिद्ध करता है मानो वे न्यूनतम सुरक्षा, हिफाजत और सामाजिक सुरक्षा के बिना मरने के लिए ही पैदा हुए हों।

यह आधुनिक 21वीं शताब्दी के लिए एक कलंक है कि दुनिया की आधे से अधिक आबादी किसी भी प्रकार की औपचारिक सामाजिक सुरक्षा संरक्षण के दायरे में नहीं है। ऐसी सामाजिक असुरक्षा जीवन का भय और असुरक्षा पैदा करती है और निर्धनता उत्पन्न करती है। आईएलओ के संस्थापक सदस्य राज्यों में से

(शेष पृष्ठ 7 पर)

ट्रम्प प्रशासन द्वारा किए जा रहे शरणार्थियों के मानवाधिकारों के हनन का विरोध

दुनिया भर में करोड़ों शरणार्थियों के पुनर्वास की उठी जोरदार मांग

दिल्ली में विरोध प्रदर्शन करते हुए जन संगठनों के कार्यकर्ता

नई दिल्ली : ट्रम्प प्रशासन द्वारा अमेरिका-मेक्सिको सीमा पर शरणार्थियों के मानवाधिकारों के पूर्ण उल्लंघन के खिलाफ ऑल इण्डिया यूनाइटेड ट्रेड यूनियन सेंटर, अखिल भारतीय महिला सांस्कृतिक संगठन, ऑल इण्डिया डेमोक्रेटिक स्टूडेन्ट्स ऑर्गेनाइजेशन और ऑल इण्डिया डेमोक्रेटिक यूथ ऑर्गेनाइजेशन ने 25 जून को संयुक्त प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारी संसद मार्ग जंतर मंतर के पास इकट्ठे हुए और अमेरिकी सेण्टर की तरफ आगे बढ़े लेकिन पुलिस ने रोक दिया। जुलूस सभा में तब्दील हो गया।

सभा को एआईयूटीयूसी, दिल्ली राज्य कमेटी सदस्य कॉ. भास्करानंद, एआईएमएसएस की राज्य सचिव कॉ. रितु कौशिक, एआईडीएसओ के राज्य उपाध्यक्ष कॉ. राहुल सरकार और एआईडीवाईओ के राज्य उपाध्यक्ष कॉ. गिरीश शर्मा, एसयूसीआई (सी), दिल्ली राज्य सचिव कॉ. प्राण शर्मा ने संबोधित किया। एआईयूटीयूसी के राज्य सचिव कॉ. मैनेजर चौरासिया ने सभा का संचालन किया।

वक्ताओं ने अमेरिका में शरण चाहने वाले मैक्सिको-अमेरिका सीमा पार करने वाले असहाय शरणार्थी परिवारों के प्रति ट्रम्प प्रशासन द्वारा किये जा रहे अमानवीय सलूक की निंदा की। उन्होंने राष्ट्रपति ट्रम्प की इस नीति के खिलाफ अमेरिकी जनता द्वारा किये गए कड़े प्रतिरोध और शरणार्थी संगठन यूएनसीएचआर और एमनेस्टी इंटरनेशनल की आलोचना की सराहना भी की जिसने अंततः उसे अपना आदेश वापस लेने के लिए मजबूर कर दिया। हालांकि, कल भी अमेरिकी राष्ट्रपति ने अमेरिकी आप्रवासन कानूनों की आलोचना

(शेष पृष्ठ 8 पर)

तेल के दाम बढ़ाने के खिलाफ वाम दलों का विरोध प्रदर्शन

दिल्ली : प्रदर्शनकारियों को संबोधित करते हुए कॉ. प्राण शर्मा

नई दिल्ली : पेट्रोल, डीजल व रसोई गैस की कीमतों में की गई बेतहाशा मूल्य वृद्धि के खिलाफ 6 वामपंथी पार्टियों द्वारा 20 जून को संसद मार्ग पर संयुक्त विरोध प्रदर्शन किया गया। सभा को अन्य वाम दलों के नेताओं के अलावा एसयूसीआई(सी) की ओर से कॉमरेड प्राण शर्मा द्वारा संबोधित किया गया।

कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाओं का अनुसरण करते हुए खुद को बदल डालने के सतत संघर्ष ने ऊंचे दर्जे का क्रान्तिकारी चरित्र हासिल करने में की कॉमरेड प्रणती भट्टाचार्य की मदद

4 जून, 2018 को स्मृति सभा में कॉमरेड प्रभास घोष का भाषण

मुझे एक प्रिय कॉमरेड के खोने के गहरे दर्द से भरे दिल के साथ बात रखनी पड़ रही है। यह एक कठिन काम है। विशेष रूप से, जब हम उम्र दराज लोगों को एक जूनियर कॉमरेड के निधन के दर्द का सामना करना पड़ता है, तो यह सब अधिक असहनीय है। लेकिन मैंने सख्ती से नियंत्रण रखने और मेरे जज्बातों पर काबू रखने का संकल्प किया है और आपके सामने कुछ बिंदुओं को रखने की कोशिश करूंगा।

आप जानते हैं कि हमारी पार्टी सिर्फ एक राजनीतिक संगठन नहीं है। महान मार्क्सवादी विचारक कॉमरेड शिवदास घोष ने इस पार्टी को क्रांतिकारी उद्देश्य से, एक बिल्कुल नये ढंग के इन्सानों के दस्ते को तैयार करने के उद्देश्य से मार्क्सवाद-लेनिनवाद-सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयतावाद और उच्च क्रांतिकारी संस्कृति के आधार पर और भी उन्नत तरीका अपनाकर बनाया। अंधेरे से घिरे माहौल में उन्होंने हमारे लिए सच्चा मानव चरित्र हासिल करने के लिए एक नई राह रोशन की। यह उन्हीं की दी हुई सीख है कि यह एक ऐसा काम है जो उच्च हृदयवृत्ति और प्यार के काम को दर्शाता है। हमारी पार्टी का क्रांतिकारी संघर्ष शोषित लोगों की मुक्ति के लिए है, और लोगों के प्रति ममता-प्यार से सराबोर यह संघर्ष चलता रहता है। आज, जब सामाजिक मूल्यों में तीव्र संकट के कारण पारिवारिक जीवन और सामाजिक जीवन टूट रहे हैं, जब प्यार और सुकोमल भावनाएं नष्ट हो रही हैं, तब भी हमारी पार्टी सर्वहारा संस्कृति के एक उच्च रूप पर आधारित एक नए प्रकार के प्यार के बंधन से एक परिवार की तरह बढ़ रही है। इस परिवार में जब कोई जूनियर सदस्य जिसे क्रांतिकारी आंदोलन में अभी बहुत अधिक योगदान करना था, गुजर जाता है, तो इससे और भी ज्यादा दु:ख होता है।

मुझे लगता है कि आप सभी प्रणती भट्टाचार्य को नाम से जानते हैं। पार्टी में वे जिस पद पर थी, उससे भी आप वाकिफ हैं और उनके द्वारा निभायी गई जिम्मेदारी के बारे में भी जानते हैं। लेकिन कुछेक नेताओं और पार्टी कार्यकर्ताओं को छोड़कर, बाकी आपको सीधे उनको जानने का कोई मौका नहीं था। उसके लिए मैं जिम्मेदार हूँ और इसके लिए मुझे बहुत खेद है। एक जूनियर कॉमरेड सुष्मिता ने पहली बार शिवपुर पार्टी सेण्टर में उनकी एक संक्षिप्त चर्चा को सुनकर मुझसे उनके निधन के बाद पूछा था, "आपने विभिन्न जगहों पर चर्चा के लिए प्रणतिदी को क्यों नहीं भेजा? वे इस मामले को इतने सरल और आसान तरीके से बताती हैं कि यह दिल को छू लेता है।" मुझे भी इसका पछतावा है। मैं उन्हें विभिन्न जिलों, विभिन्न राज्यों में भेजने के लिए विचार कर रहा था, ताकि अन्य लोग भी ऐसे चरित्र को जान सकें और सराहना कर सकें। बस उनके हत्यारे रोग का निदान कर लिया गया था। अत: मुझे मौका नहीं मिला। मैं पछताता हूं कि मैंने यह कदम पहले क्यों नहीं उठाया!

मैं प्रणति भट्टाचार्य से आपको परिचित कराने के लिए कुछ शब्द कहूँगा जिन्हें आप में से कई नहीं जानते हैं। मैं शोक प्रस्ताव में उल्लेखित बिंदुओं और बांग्लादेश के क्रांतिकारी नेता, कॉमरेड मोबिनुल हैदर चौधरी द्वारा दी गई दिल को छू लेने वाली श्रद्धांजलि के साथ पूर्ण सहमत हूँ। मैं उसके बारे में जो कुछ कहूँगा, वह उनके बारे में मेरे इम्प्रेशन पर आधारित है; मैंने उन लोगों से भी जानकारी एकत्रित की है जो उन्हें करीब से जानते थे और मैंने यह निष्कर्ष निकाला कि मेरे इम्प्रेशन सही हैं और मुझे उनके बारे में कुछ नए तथ्यों का भी पता चला है जो पहले मेरी जानकारी में नहीं थे। मुझे नहीं पता कि मैं इस चर्चा में सब कुछ समेट पाऊंगा या नहीं, लेकिन मैं कोशिश करूंगा। मुझे यह उल्लेख करने की जरूरत है कि मैं कभी-कभार ही पुरुलिया जिले का दौरा किया करता था। मैंने कॉमरेड प्रणती भट्टाचार्य को छात्रों की बैठकों में कई अन्य लोगों के साथ बैठे देखा था। कॉमरेड प्रणति भट्टाचार्य के गुणों को जानने और सराहना करने में मुझे कुछ समय लगा। जो नेता मुझ से पहले वहां जाया करते थे और वहां नियमित रूप से वहां जाते थे, वे उन्हें प्यार करते थे और उनके लिए स्नेह था। हो सकता है कि उसके गुण तब विकसित नहीं हुए थे, या उनके लिए स्पष्ट नहीं थे।

कॉमरेड प्रणती भट्टाचार्य का बचपन, किशोरावस्था और यौवन पश्चिम बंगाल में एक अलग वातावरण में बीता था। विश्व समाजवादी खेमा अस्तित्व में था, उस समय अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन का एक जोरदार प्रभाव था, साम्राज्यवाद-विरोधी आंदोलन की धारा प्रबल थी और पश्चिम बंगाल में वामपंथ का प्रभाव मौजूद था। मैं 1967-68 के दौर की बात कर रहा हूँ। कॉमरेड रंजीतदा ने मुझे यह उल्लेख करने के लिए याद दिलाया है कि वे सबसे गरीब और सबसे पिछड़े पुरुलिया जिले के एक अज्ञात से गांव में एक गरीब और गैर-वर्णित ग्रामीण परिवार में पैदा हुई थी। चाहे कारण जो भी हो, पुनर्जागरण, स्वतंत्रता आंदोलन और धार्मिक मूल्यों का प्रभाव परिवार के भीतर काम कर रहा था। प्रणति भट्टाचार्य के दिल में उनके माता-पिता के लिए गहरा सम्मान था। वे उच्च रुचि-संस्कृतिवान थे। परिवार में साहित्य और संगीत के पल्लवित होने का माहौल था। इस माहौल में उनका मानसिक

स्मृति सभा को संबोधित करते हुए कॉमरेड प्रभास घोष

गठन हुआ था। पुरुलिया में पार्टी संगठन का निर्माण दिवंगत नेता कॉमरेड प्रीतीश चंदा ने किया था। एक तरफ उन्होंने एड्रा में रेलवे श्रमिकों के बीच संपर्क स्थापित किए और दूसरी ओर वे अर्षा और बागमुंडी में पार्टी संगठन का निर्माण भी कर रहे थे। हमारी पार्टी के पुरुलिया जिला के पूर्व सचिव कॉमरेड निर्मल मंडल के माध्यम से कॉमरेड प्रणती भट्टाचार्य कॉमरेड प्रीतीश चंदा के संपर्क में आईं। मैंने पहली बार 1968 में कॉमरेड प्रणती से मुलाकात की। मैं डीएसओ के छात्रों की बैठक के लिए मुर्शिदाबाद जिले के जियागंज गया था। कॉमरेड प्रणती भट्टाचार्य कुछ छात्रों को उस बैठक में लाई थीं। वित्तीय कठिनाई के कारण पढ़ाई के लिए उन्हें उनकी बड़ी बहन के घर भेजा गया था। उनके हावभावों से मैं उनके समर्पण और कुछ करने की इच्छा को महसूस कर सका था, लेकिन इससे ज्यादा कुछ और नहीं भांप पाया। उन दिनों में जियागंज में पार्टी संगठन बहुत कमजोर था। मैंने तत्कालीन मुर्शिदाबाद जिला सचिव कॉमरेड प्रांगौर बसाक को बताया कि उन्हें सयत्न विकसित करे, क्योंकि स्थानीय पार्टी संगठन इस काम को कर नहीं पाएगा। इसके तुरंत बाद, कॉमरेड प्रणती भट्टाचार्य पुरुलिया वापस चली गईं। समय-समय पर मैंने उन्हें छात्रों के कार्यक्रमों में देखा। मेरे दौरे बहुत ही कम होते थे। तब दिवंगत नेता कॉमरेड सुकोमल दासगुप्त पुरुलिया जिले को देखा करते थे। कॉमरेड रंजीत धर भी समय-समय पर चले जाते थे; दिवंगत नेता कॉमरेड आशुतोष बनर्जी भी यूं तो वहां चले जाते थे। उनके विशिष्ट गुणों की वजह से सभी उन्हें समर्पित पार्टी कार्यकर्ता के रूप में देखते थे, उन्हें प्यार किया करते थे, उनके लिए स्नेह था। कॉमरेडों की एक ऐसी श्रेणी होती है जो नेताओं के करीब आना पसंद करते है, उनके साथ बहुत सारी वार्ताएं होती हैं और उनके साथ घनिष्ठ होना चाहते हैं। लेकिन कॉमरेड प्रणती भट्टाचार्य बैठकों में भाग लेती थीं, ध्यान से सुनती थीं और निष्ठा-लगन के साथ समर्पित भाव से काम करती थीं। लेकिन नेताओं के करीब आने, उनसे घनिष्ठता कायम करने की उनकी आदत नहीं थी – शायद इस वजह से उनके सभी गुण तत्कालीन नेताओं के ध्यान से बचे रहे। जब मैं राज्य सचिव चुना गया, तो कॉमरेड प्रणती भट्टाचार्य पुरुलिया जिला कमेटी की सदस्य चुनी गईं। कॉमरेड जानते हैं कि राज्य सचिव होने के नाते मैं विभिन्न जिलों में उतना नहीं घूम सका जितना मैं पहले घूमा करता था। चूंकि कॉमरेड निहार मुखर्जी महासचिव बन गए थे, वे लगभग शुरुआत से ही बीमारी से ग्रस्त थे। पश्चिम बंगाल में एक के बाद एक लगातार जन आंदोलन चल रहा था; सीपीआई (एम) की हिंसा में हमारे कई कॉमरेड शहीद हो गए थे। इन सभी के बीच में मैं काफी हद तक कलकत्ता केंद्रित हो गया था। 2002-03 में मैंने कुछ संगठनात्मक समस्याओं पर पुरुलिया जिला कमेटी की बैठक में भाग लिया और मैंने पहली बार उन्हें संगठनात्मक मामलों में वस्तुपरक वास्तविकता की गहरी समझ रखने वाली, जूनियर कॉमरेडों के लिए फिक्रमंद और वरिष्ठ कॉमरेडों के साथ मतभेद व्यक्त करते समय विनम्र लेकिन तार्किक रूप से सशक्त पाया। इन सभी को देखकर मैं पहली बार आकर्षित हुआ। और मैंने उनसे उम्मीदें बांध ली। उस समय पुरुलिया जिला कमेटी कई समस्याओं से घिरी हुई थी। तत्कालीन जिला सचिव बीमारी से ग्रस्त थे। हम नेतागण सोच रहे थे कि क्या किया जाए। 2006 में मैंने सुझाव दिया कि कॉमरेड प्रणति भट्टाचार्य को जिले की जिम्मेदारी दी जाए। हमारे वरिष्ठ नेता उससे बहुत प्यार किया करते थे, उनसे बहुत स्नेह था। लेकिन उन्हें संदेह था कि एक जूनियर कामरेड के रूप में वे उन वरिष्ठ कामरेडों के नेता के रूप में इस जिम्मेदारी का निर्वहन कर सकेंगी कि नहीं, जिनके तहत वे पहले काम किया करती थी। अंत में मैंने दिवंगत सम्मानित महासचिव कॉमरेड निहार मुखर्जी की राय मांगी। विवरण सुनने के बाद कॉमरेड निहार मुखर्जी ने अपनी सहमति दे दी। इसके बाद उन्होंने सीनियर और जूनियर कामरेडों का दिल जीतते हुए जिला सचिव के रूप में जिस तरह काम किया, वह काबिले तारीफ और अनुकरणीय है। इससे पहले पुरुलिया जिले के दोनों हिस्सों के काम में कोई समन्वय नहीं था। जब कॉमरेड प्रणति भट्टाचार्य सचिव बनी, दोनों हिस्सों के संयोजन के साथ संयुक्त जिला कमेटी के नेतृत्व में पहली बार तालमेल रखते हुए संगठनात्मक कार्य शुरू हुआ। इससे पहले कॉमरेडों के बीच नियमित संपर्क रखने में कमी थी और आपसी प्रेम और सम्मान पाने की कामरेडों में एक लालसा थी। अब उन्हें एक सचिव मिली जिसने दैनिक जीवन की उनकी खुशियों और गमों को साझा किया और जिसने प्यार और करुणा से सभी के दिल जीत लिए और जिले के पार्टी कार्यकर्ताओं की मां जैसी बन गई। जो लोग उनके वरिष्ठ कॉमरेड थे, जिनके तहत उन्होंने पहले काम किया था, उन्हें भी उनके नेतृत्व को स्वीकार करने में कोई हिचकिचाहट नहीं हुई थी। उन्होंने उन्हें स्नेह और विश्वास के साथ देखा। मैंने सुना है कि जिला कमेटी की बैठकों में वे उनको सहयोगियों के रूप में मान्यता देती थीं जो उनके बेटों या बेटियों की तरह थे और जो वरिष्ठ कॉमरेड थे उनके साथ उनकी छोटी बहन की तरह व्यवहार करती थीं और निर्णय लेने से पहले सभी को सुनती थीं। यह एक आसान बात नहीं है। उन्होंने कॉमरेड शिवदास घोष की क्रांतिकारी शिक्षाओं को अपने दिल में रचा-बसा लिया था, पार्टी और नेतृत्व के प्रति निर्विवाद निष्ठा व्यक्त की थी, और अपनी पहल पर संगठन और जन आंदोलनों के निर्माण के लिए काम करना शुरू कर दिया था; पार्टी के सभी साथियों और शोषित-उत्पीड़ित लोगों के लिए असीम प्यार से, अपनी निष्ठा-लगन-समर्पण से, सहज-सरल सुचारू ढंग की कार्य शैली से, संस्कृति के उच्च स्तर को दर्शाने वाल अपने दृढ़, मजबूत व्यक्तित्व से, गरिमा और विनम्र व्यवहार से उन्होंने पार्टी के अंदर और बाहर के कई लोगों के दिल जीते थे।

मैं यहां एक बिंदु पर जोर देना चाहता हूँ। वे आपके लिए और हमारे लिए भी जो मंच पर बैठे हैं, एक बहुत ही शिक्षाप्रद उदाहरण हैं। कई कामरेडों ने कहा है और यह मेरा अवलोकन भी है कि उनके चरित्र का एक बड़ा गुण यह था कि उन्हें देखकर कोई भी यह नहीं समझ सकता कि वे एक जिला सचिव, एक राज्य कमेटी सदस्य, एक राज्य सचिव मण्डल सदस्य और बाद में एक स्टाफ सदस्य थीं। एक नेता बनने से पहले और बाद में उनके आचरण, व्यवहार, रंगढ़ंग, कार्यकलाप और जीवन शैली में कोई बदलाव नहीं आया था। वे सभी की प्रिय थीं, एक ऐसी व्यक्ति थी जिसके साथ वे अपनी खुशी और गम साझा कर सकते थे, जिनके आगे वे अपनी सभी भावनाओं का बोझ हल्का कर सकते थे। यह उनके चरित्र का एक बड़ा पहलू था। हम सभी को इससे सीखना चाहिए। वे कभी भी नेता बनना नहीं चाहती थीं, कभी सोचा नहीं था कि वे किस कमेटी में थीं, इस बारे में उनके मन में कभी कोई सवाल नहीं था कि किसे अहमियत दी जा रही है और किसे नहीं। वे अपने काम में तल्लीन रहती थीं। यह एक सच्चे नेता का गुण है। यह हकीकत है कि जब उन्हें पहली बार राज्य कमेटी में शामिल किया गया, तो उन्होंने पूछा था, "क्या मैं इसके लिए योग्य हूँ?" मैंने

(शेष पृष्ठ 3 पर)

सुकोमल भावनाओं से लैस उनके ज्ञान और उच्च संस्कृति की वजह से अत्यंत सहज-सरल और दिल को छू लेने वाली होती थी उनकी चर्चाएं

(पृष्ठ 2 का शेष)

उनसे कहा था, "आपको साबित करना होगा कि आप योग्य हैं।" जब उनकी स्टाफ सदस्यता का ऐलान दिल्ली में दूसरी पार्टी कांग्रेस में किया गया था, तब मैंने उनकी आँखों में आँसू देखे थे। कॉमरेड निहार मुखर्जी ने निर्णय लिया कि तत्कालीन मौजूदा स्टाफ सदस्यों में से कुछ सदस्यों ने स्टाफ सदस्य के लिए अपनी योग्यता खो दी है। दिवंगत कॉमरेड प्रतिभा मुखर्जी ने अपनी स्टाफ सदस्यता खो दी थी। जब स्टाफ सदस्य के रूप में उनके नाम की घोषणा की गई थी, तो कॉमरेड प्रणती भट्टाचार्य को कॉमरेड प्रतिभा मुखर्जी के गले लगकर सुबक-सुबक कर रोते हुए पाया गया था। मंच से मैंने यह देखा था। बाद में कॉमरेड प्रतिभा मुखर्जी ने भी मुझे बताया था। इस मुद्दे पर मैं यह बताना चाहता हूँ कि मौजूदा स्टाफ सदस्यों में से किसने स्टाफ सदस्यता बनाए रखी है और किसने गवां दी है यह मामला कॉमरेड निहार मुखर्जी द्वारा खुद तय किया गया था। उन्होंने हमसे कुछ नए नाम मांगे थे। कुछ नामों के बारे में उन्होंने प्रश्न उठाए थे और सहमत नहीं थे। जब कॉमरेड प्रणति भट्टाचार्य का नाम आया, तो उनका चेहरा खिल गया था। यह अभी भी मेरे लिए जीवंत है। उन्होंने केवल इतना कहा था, "उसे यहाँ बुलाओ, मैं उसे देखना चाहता हूँ।" मुझे एहसास हुआ कि उनके दिल में भी वे एक जगह रखती थीं। अहंकार, दंभ या खुद के दिखावे का तो कोई नामोनिशान तक उनमें नहीं था, वे "मैं एक नेता हूँ" की शेखी नहीं बघारती थीं। यह एक सच्चे नेता की निशानी है। जब वे बिस्तर पर थीं, उन्हें केंद्रीय कमेटी में लिया गया था। हिचकिचाते हुए उन्होंने कॉमरेड सौमेन बसु से कहा था, "आपने यह निर्णय क्यों लिया है? मेरे पास क्या योग्यता है? मैं पार्टी को और क्या दे पाऊंगी?"

मैं जिस बात पर जोर देना चाहता हूँ वह यह है कि हमारे स्तर के किसी भी नेता ने उसे पोषित नहीं किया, उसकी देखभाल नहीं की, उन्हें बनाने के लिए उन्हें दैनिक मार्गदर्शन नहीं दिया। कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाओं के आधार पर खुद को नये सांचे में ढालने के लिए अपने स्वयं के निरंतर संघर्ष ने उन्हें इस कद तक बढ़ा दिया था। हम सभी जानते हैं कि आंतरिक द्वंद्व और बाहरी द्वंद्व दोनों ही हर किसी के विकास के लिए कार्य करते हैं। आंतरिक द्वंद्व के प्रत्युत्तर देने पर बाहरी द्वंद्व सफलतापूर्वक कार्य करता है। कई बार यह देखा जाता है कि मैं जिस व्यक्ति के गुण सुधारने की कोशिश कर रहा हूँ वह ठीक से प्रतिक्रिया नहीं दे रहा है, भले ही वह व्यक्ति मेरे बहुत करीब है। इसके विपरीत कुछ ऐसे हैं जो हमारे से अर्थात् नेताओं से दूर हैं, लेकिन कॉमरेड शिवदास घोष की कृतियों को पढ़ चुके हैं या उनके भाषण को सुना है, नेताओं से मूल्यवान चर्चाएं सुनी हैं, उनसे मिलने वाली सीखें चुन-चुन कर निकाल ली हैं और उन्हें पूरी तरह से आत्मसात कर लिया है। स्वयं को बनाने के लिए ऐसा संघर्ष भी उच्च स्तर प्राप्त करने में मदद करता है। कॉमरेड प्रणती भट्टाचार्य के मामले में यही हुआ। "कोई बात जाने कुछ, लेकिन व्यवहार करे इसके उलट, बात करे इसके उलट" – वे ऐसी नहीं थीं। ऐसा नहीं है कि उसने कोई गलती नहीं की है। गलतियाँ हर किसी से होती हैं। लेकिन जब उन्होंने स्वयं गलती को पहचाना या जब किसी और ने उसे बताया, तो उसे सुधार में उनकी तरफ से कोई लापरवाही नहीं थी। यह सभी के लिए एक और शिक्षाप्रद बिंदु है।

हावड़ा : 4 जून को स्मृति सभा को संबोधित करते हुए कॉ. प्रभास घोष और मंच पर बैठे अन्य नेतागण

मुझे 2006 से उनके साथ बारीकी से बातचीत करने का अवसर मिला। यह सच है कि बाद में वे मेरे साथ बहुत घनिष्ठ हो गई थीं। उनमें ज्ञान की एक जबरदस्त प्यास थी। शुरुआत में उन्होंने बहुत कुछ नहीं पढ़ा। बाद में वे बहुत अच्छी तरह से और सावधानी से पढ़ने लगीं। जब उनके मन में कोई सवाल उठता था, तो वे टेलीफोन से पूछती थीं या कलकत्ता चली आती थीं। जब वे कलकत्ता नहीं आ पाती थीं, तो सप्ताह में 2-3 बार वे निश्चित रूप से मुझे फोन करती थीं और मुझे कई घटनाओं के बारे में सूचित करती थीं, मेरी सलाह लेती थीं या कुछ सैद्धांतिक विषयों के बारे में जानना चाहती थीं। उन्हें दर्शन, राजनीति, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों, और ऐसे सभी विषयों के बारे में गहरी समझ थी। सुकोमल भावनाओं और उच्च संस्कृति के साथ मिश्रित होकर उनका सैद्धांतिक ज्ञान इस तरह के सरल तरीके से व्यक्त होता था कि सिद्धांत चकाचौंध नहीं करता था। वे किसी व्यक्ति के अन्तर्मन की गहराई में प्रवेश कर सकती थीं। सभी ने उनकी सादगी और उसकी आसान सहज शैली के बारे में टिप्पणी की है। कई लोगों को गलतफहमी है कि अगर कोई सीधा-सरल है, तो इसका मतलब है कि वह बुद्धू है। यह बिल्कुल सही नहीं है। यदि कोई कम बुद्धिमान है, तो उसके पास एक प्रकार की सादगी है। लेकिन एक बुद्धिमान, एक बेहद बुद्धिमान व्यक्ति भी एक अलग प्रकार का सरल होता है। बुद्धिमत्ता (इंटेलिजेंस) कोई जन्मजात गुण नहीं होता है। बुद्धिमत्ता तार्किक रूप से जांच-परख करने की एक हासिल करने लायक क्षमता होती है। अगर बुद्धिमत्ता सही विचारधारा द्वारा निर्देशित की जाती है, तो यह रचनात्मक और फायदेमंद होती है। लेकिन अगर बुद्धि भटक जाती है, व्यक्तिगत हित में निर्देशित होती है, तो यह चालाकी या धूर्तता के सिवा और कुछ भी नहीं होती है और हानिकारक या बुरी होती है। अगर कोई आदमी बहुत बुद्धिमान और सरल है तो वह एक जटिल मामले को सरल तरीके से समझ सकता है और इसे सरल तरीके से ही व्यक्त भी कर सकता है। उनके पास यह क्षमता थी, हालांकि वे आमतौर पर उच्च नेतृत्व, वरिष्ठ कामरेडों की उपस्थिति में मुखर नहीं थीं। वे सीखने की दृष्टि से ध्यान से बात सुनती थीं। यही कारण है कि कई वरिष्ठ नेता उनके ज्ञान के स्तर को माप नहीं पाते थे। जूनियरों के लिए वे आवश्यक बिन्दुओं को बहुत कम शब्दों में सरल ढंग से समझा देती थीं।

हमेशा ऐसा नहीं होता है कि पार्टी नेता भी है और वही जन नेता भी है। अगर ऐसा हो, तो इससे दोनों की भूमिका अधिक प्रभावी हो जाती है। एक पार्टी नेता पार्टी कार्यकर्ताओं को मार्गदर्शन प्रदान करता है, उन्हें निर्देशित करता है, कमेटी के काम का संचालन करता है, कार्यक्रम देता है, पार्टी के अन्दरूनी जीवन की देखभाल करता है, पार्टी अनुशासन को बनाए रखता है। एक जन नेता लोगों को संगठित करता है, जनआंदोलन खड़ा करता है। इसलिए सभी पार्टी नेता जन नेता नहीं बन जाते हैं। दूसरी ओर एक जन नेता स्वत:स्फूर्त रूप से पार्टी नेता बनने की क्षमता प्राप्त नहीं कर लेता है। जन नेता एक ट्रेड यूनियन नेता, एक महिला नेता, एक युवा नेता, एक छात्र नेता, जनसंगठन का अध्यक्ष या सचिव हो सकता है – लेकिन वे सभी घोषित नेता हैं। एक और प्रकार के नेता होते हैं जो जनता के साथ अपनेपन के साथ घुल-मिल जाते हैं, गरीब लोगों के साथ एक हो जाते हैं, उनका सुख-दु:ख बांटते हैं, लगभग परिवार के सदस्य के रूप में स्वीकार कर लिए जाते हैं, उन्हें विभिन्न प्रतिवादात्मक आंदोलनों को छेड़ने के लिए लामबंद करते हैं और इस तरह उनके दिल को जीत लेते हैं तथा इस प्रकार उनके नेता बन कर उभरते हैं। यह कोई आसान बात नहीं है। इस तरह कामरेड प्रणती भट्टाचार्य पुरुलिया जिले के लोगों की नेता बन गई थी। इसलिए जब बिना धूमधाम के उनका शव लेकर जुलूस पुरुलिया पहुंचा, तो हजारों लोग नम आँखों के साथ वहां जुटे थे। मुस्लिम क्वार्टरों में, आदिवासी क्वार्टरों में, किसी भी घर में, झोपड़ियों में उनका खुला प्रवेश था। लोगों को लगता था कि वे उनमें से एक थीं। पुरुलिया जिले में सभी गरीब, शिक्षित हों या अशिक्षित, सभी लोग उनका बड़ा आदर-सम्मान करते थे। राजनीतिक मतभेदों के बावजूद अन्य पार्टियों के नेता-कार्यकर्ता भी उनका सम्मान किया करते थे। विपत्ति या परेशानी के समय में वे उनके पास दौड़ कर जाती थीं। जब भी कोई अन्याय या दमन हुआ, तो वे विरोध करने के लिए संघर्ष में कूद पड़ती थीं, भले ही उनके साथ कोई हो या न हों, चाहे कोई उसे बुलाए या नहीं, चाहे निर्देश आए या नहीं। इस तरह के कुछ प्रतिवादात्मक आंदोलनों का शोक प्रस्ताव में जिक्र किया गया है, लेकिन ये पर्याप्त नहीं हैं।

सभी तबकों के आम लोग अपनी समस्याओं को लेकर समाधान के लिए बेहिचक उनके पास दौड़े आते थे, चाहे पारिवारिक परेशानी हो, या महिलाओं के जीवन में गहरा दु:ख-दर्द हो, या पति और पत्नी या बच्चों को लेकर समस्याएं हों। उन्होंने अनगिनत ऐसे लोगों के दिल में एक स्थायी स्थान बना लिसा था। ट्रेन यात्रा, या बस यात्रा, या सुबह की सैर के दौरान, या रेलवे स्टेशन पर गाड़ी का इंतजार करते समय और चाय पीते समय – हर जगह वे विभिन्न विषयों पर जनता के साथ चर्चा में घुस जाती थीं। अपनी सभी चर्चाओं के माध्यम से, वे एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) पार्टी और अपने शिक्षक और पथप्रदर्शक कॉमरेड शिवदास घोष को लोगों तक ले जाया करती थीं। ऐसे कई कॉमरेड हैं जो जनता के साथ घुलते-मिलते हैं, आंदोलन करते हैं और व्यक्तिगत लोकप्रियता हासिल कर लेते हैं, लेकिन उनके द्वारा स्वाभाविक ढंग से पार्टी और नेतृत्व लोकप्रिय नहीं होगा। केवल वे ही पार्टी के लिए ऐसा कर सकते हैं जिनके लिए क्रांति और क्रांतिकारी पार्टी ही एकमात्र जीवन है; आत्म-पहचान की जिनकी कोई अलग भावना नहीं है। मैं दृढ़ विश्वास के साथ कह सकता हूं कि कॉमरेड प्रणति भट्टाचार्य में व्यक्तिगत इच्छा या चाह की कोई भावना कम से कम मुझे नहीं मिली।

उन्होंने कामरेडों की कमी-खामियों की आलोचना की, लेकिन कई कामरेडों ने नम आँखों से मुझे लिखा है कि उन्हें ऐसी आलोचनाओं से आहत होने की भावना तनिक भी महसूस नहीं हुई। उनकी आलोचना प्यार और स्नेह के साथ मिश्रित थी। वे खुद भी दूसरों से आलोचना स्वीकार करने के लिए तैयार थीं। वे आसानी से जूनियर कॉमरेडों के सामने भी अपनी गलतियों को मान लेती थीं। वे सीनियरों और जूनियरों से समान रूप से सीखती थीं। अगर किसी ने उनसे आहत करने वाली बात की, तो उल्टे उसे आहत करना उनके चरित्र में नहीं था। इसके विपरीत वे प्यार से उस व्यक्ति को अपने करीब खींच लाती थी। कॉमरेड शिवदास घोष एक क्रांतिकारी चरित्र के लिए ऐसे गुण चाहते थे, और कॉमरेड प्रणती भट्टाचार्य ने अडिग संघर्ष के जरिये इन गुणों में से कई को हासिल कर लिया था, और ये स्वाभाविक और सहज ढंग से उनके चरित्र का एक अभिन्न हिस्सा बन गए थे। अपने आप को पूरी तरह से बदल डालने के इस तरह के संघर्ष का संचालन करना कोई आसान काम नहीं है। जहां भी वे चली गई, उन्होंने एक स्थायी प्रभाव छोड़ा। बांकुड़ा जिले में कई समस्याएं थीं, नेताओं और पार्टी कार्यकर्ताओं के बीच आपस में समझ की समस्याएं थीं। जो लोग पहले जिम्मेदारी में थे, वे सभी समस्याओं का समाधान नहीं कर सके। कॉमरेड प्रणती भट्टाचार्य को जिम्मेदारी दी गई। उन्होंने एक बहुत ही महत्वपूर्ण और प्रभावी भूमिका निभाई। गतिविधियों का उनका क्षेत्र बांकुरा और पुरुलिया जिलों तक ही सीमित था। इस छोटे से क्षेत्र में काम करते हुए उन्होंने अपनी महान क्षमता साबित की। पार्टी के मुखपत्रों में उनका कोई भाषण या लेख प्रकाशित नहीं हुआ था। वह इनके माध्यम से नहीं जानी जाती थी। लेकिन उनके जगमग-जगमग करते उच्च चरित्र की चमक दोनों जिलों की सीमाओं से परे फैल गई थी।

कॉमरेड शिवदास घोष चाहते थे कि हमारी पार्टी में महिलाएं नारीवादी व्यक्तियों के रूप में विकसित न हों, बल्कि सच्चे और योग्य इन्सानों के रूप में विकसित हों। पुरुष-वर्चस्व वाले समाज की बेड़ियों में जकड़ी होने के कारण, महिलाएं हीन भावना, पुरुषों पर निर्भरता, आत्मविश्वास की कमी, पति और बच्चों के प्रति कमजोरी और तंगदिल दिमागी रुझान से ग्रस्त हैं – कॉमरेड घोष चाहते थे कि महिलाएं इनसे बाहर आएं और खुद को मजबूत और ताकतवर चरित्र के रूप में विकसित करें। उनका यह सपना था। मुझे दु:ख है कि कॉमरेड प्रणती भट्टाचार्य केवल दूर से ही कॉमरेड शिवदास घोष को जानती थी। कॉमरेड शिवदास घोष कॉमरेड प्रणति को घनिष्ठ रूप से नहीं जानते थे। उन दिनों पुरुलिया जिले में कुछ महिला कॉमरेड थी जो ऊपरी तौर पर होनहार लगती थी। उन दिनों के नेता उन्हें कॉमरेड शिवदास घोष से मिलाने के लिए लाये थे। लेकिन वे कठिन

(शेष पृष्ठ 6 पर)

मंदसौर बलात्कार काण्ड के खिलाफ रोष प्रदर्शन

नई दिल्ली : मध्य प्रदेश के मंदसौर जिले में मासूम बच्ची से सामूहिक बलात्कार की घटना के खिलाफ एआईएमएसएस, एआईडीएसओ और एआईडीवाईओ द्वारा दिल्ली स्थित मध्य प्रदेश भवन पर 30 जून को रोष प्रदर्शन किया गया।

सभा को एआईएमएसएस की दिल्ली राज्य सचिव कॉ. रितु कौशिक व सदस्य कॉ. शारदा दीक्षित, एआईडीएसओ की दिल्ली राज्य सचिव कॉ. श्रेया सिंह व राज्य कमेटी सदस्य कॉ. सौम्या सामल और एआईडीवाईओ. की दिल्ली राज्य अध्यक्ष प्रकाश सैनी व राज्य उपाध्यक्ष कॉ. इंद्रदेव ने संबोधित किया। सभा का संचालन एआईएमएसएस की दिल्ली राज्य सचिवमण्डल सदस्य कॉ. सुमन यादव ने किया। एआईएमएसएस की दिल्ली राज्य उपाध्यक्ष कॉ. कुसुम सिंह के नेतृत्व में एक तीन सदस्यीय प्रतिनिधिमण्डल ने मुख्यमंत्री के नाम एक ज्ञापन भी सौंपा।

वक्ताओं ने कहा कि ये बहुत ही शर्मनाक और दिल दहला देने वाली घटना है जिसमें 7 साल की एक मासूम बच्ची से इस कदर हैवानियत की गई कि सोचकर भी रूह काँप उठती है। 'बेटी-बचाओ-बेटी पढ़ाओ' और 'बहुत हुआ नारी पर वार अबकी बार भाजपा सरकार' का नारा लगाकर सत्तासीन हुई भाजपा सरकार के द्वारा शासित प्रदेशों में आज महिलाओं और बच्चियों के साथ होने वाले अपराध तीव्र गति से बढ़ रहे हैं। महिलाओं और बच्चियों पर बढ़ते अपराधों के मुख्य कारण शराबखोरी और अश्लीलता के प्रचार-प्रसार को रोकने के लिए सरकार कोई भी कदम नहीं उठा रही है। शराबखोरी और अश्लीलता को बढ़ावा दिया जा रहा है। इसके अलावा अपराधियों को राजनैतिक संरक्षण दिया जा रहा है जिसके कारण अपराधी निर्भय होकर घूमते हैं।

वक्ताओं ने इस बात पर अत्यंत रोष व चिंता व्यक्त की कि ऐसे समय में जब भारत पूरे विश्व में महिलाओं के लिए सबसे असुरक्षित देश बन गया है तब भी हमारे देश के माननीय प्रधानमंत्री चुप हैं। प्रदर्शनकारियों ने शिवराज सिंह बलात्कार के आरोपी को उदाहरणमूलक सजा देने और महिलाओं और बच्चियों पर बढ़ते अपराधों की रोकथाम के कदम उठाने की मांग की।

दिल्ली विश्वविद्यालय के शिक्षकों की नियुक्ति में भेदभाव का विरोध

दिल्ली विश्वविद्यालय में डूटा की प्रेस कांफ्रेंस को संबोधित करते हुए कॉमरेड प्राण शर्मा

दिल्ली : विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के परिपत्र के विरोध में 11 मार्च को दिल्ली विश्वविद्यालय के शिक्षक संघ (डूटा) ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित की। इसमें विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों सहित सात वामपंथी दलों को भी आमंत्रित किया गयां। एसयूसीआई (सी) के कॉमरेड प्राण शर्मा, सीपीएम के सीताराम येचुरी, सीपीआई की अमरजीत कौर, सीपीआई-एमएल लिबरेशन की कविता कृष्णन, एआईएफबी के जी. देवराजन इनमें प्रमुख थे।

कॉमरेड प्राण शर्मा ने डूटा आंदोलन के साथ एकजुटता व्यक्त करते हुए कहा कि यूजीसी के इस परिपत्र ने फिर से उच्च शिक्षा और शैक्षणिक संस्थानों पर एक कुठाराघात किया है। इस परिपत्र के परिणामस्वरूप, एसटी, एससी, ओबीसी उम्मीदवारों को शिक्षक के पदों पर नियुक्ति से वंचित कर दिया जाएगा। विज्ञापित 311 पदों में से उनके लिए केवल 21 पद निर्धारित किए गए हैं। संविधान के अनुसार, वे 155 पदों के लायक हैं। उन्होंने कहा कि दिल्ली विश्वविद्यालय के विभिन्न कॉलेजों में लगभग 4000 शिक्षकों की नियुक्तियां अस्थायी आधार पर की हुई हैं। उन्हें नियमित यानी पक्का नहीं किया जा रहा है जबकि वे पिछले 10-15 सालों से काम कर रहे हैं। एसयूसीआई(सी) नेता ने डूटा आंदोलन का हर तरह से सहयोग करने की बात कही। उन्होंने शिक्षित लोगों से इस परिपत्र को रद्द करने की मांग करने के लिए एकजुट होने का भी आग्रह किया।

गुना : मध्य प्रदेश के मंदसौर जिले में 7 वर्षीय मासूम बच्ची से हुए दुष्कर्म के खिलाफ 29 जून को रोष प्रदर्शन करते हुए एआईएमएसएस, एआईडीवाईओ और एआईडीएसओ कार्यकर्ता।

ज्वलंत समस्याओं को लेकर छात्रों का धरना

हजारीबाग : धरना देते हुए एआईडीएसओ कार्यकर्ता

हजारीबाग : 18 मई को एआईडीएसओ के द्वारा विभावि प्रशासनिक भवन के समक्ष धरना प्रदर्शन किया गया। धरने की अध्यक्षता जिला अध्यक्ष जीवन यादव ने की। विभावि कुलपति डॉ. रमेश शरण ने कहा कि ज्ञ.ठ महिला महाविद्यालय में वसूली गई अतिरिक्त फीस को लेकर प्राचार्या को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया है एवं वसूली गई फीस को समायोजित किया जाएगा। अब से विश्वविद्यालय के अंतर्गत सभी महाविद्यालयों की फीस संरचना एक समान होगी।

संगठन के जिला कार्यालय सचिव मोहम्मद फजल ने कहा कि अवैज्ञानिक सेमेस्टर सिस्टम लाखों छात्रों के भविष्य बर्बाद कर रहा है। बिना पढ़ाई सिर्फ परीक्षाएं हो रही हैं। पूजा कुमारी ने कहा कि विश्वविद्यालय सिर्फ डिग्री बांटने और परीक्षाएं लेने का कारखाना बनकर रह गया है। शिक्षक, कर्मचारी, छात्र सभी सीबीसीएस सेमेस्टर सिस्टम से परेशान हैं। केबी महिला महाविद्यालय के प्राचार्य की तानाशाही चरम पर है। प्रियंका कुमारी ने कहा कि महिला कॉलेज में किसी भी बात का विरोध करने पर प्राचार्य द्वारा धमकियां दी जाती हैं। जीवन यादव ने गैर-वैज्ञानिक सीबीसीएस व सेमेस्टर सिस्टम के खिलाफ छात्र आंदोलन गठित करने का आह्वान किया।

शिक्षा पर हमलों के खिलाफ परिचर्चा

मुरादाबाद (उ.प्र.) : शिक्षा पर हो रहे हमलों के खिलाफ 13 मई को चित्रगुप्त इंटर कॉलेज में एक परिचर्चा का आयोजन किया गया। इसकी अध्यक्षता महाराजा हरीशचंद्र डिग्री कॉलेज के फाइन आर्ट के विभागाध्यक्ष डॉक्टर नरेंद्र सिंह ने की और संचालन एस.पी. सिंह राजपूत ने किया। मुख्य वक्ता अखिल भारतीय शिक्षा बचाओ समिति के सदस्य देवाशीष राय ने कहा कि शिक्षा का निजीकरण-व्यापारीकरण किया जा रहा है। शिक्षा को महंगा किया जा रहा है। यह सब शिक्षा के विकास के नाम पर किया जा रहा है। उनहोंने बताया कि शिक्षा के मामले में भारत दुनिया के 134वें पायदान पर है जो खेद का विषय है। सरकार वैज्ञानिक, जनवादी और धर्मनिरपेक्ष शिक्षा देने की बजाय इसे रूढ़िवादी- दकियानूसी बना रही है और छात्रों को अंधविश्वास की तरफ ले जा रही है। उन्होंने सभी से शिक्षा को बचाने के लिए आगे आने का आह्वान किया।

शिक्षा को बचाने के लिए हस्ताक्षर अभियान चलाने का निर्णय लिया गया। समिति की मुरादाबाद इकाई का गठन भी किया गया जिसमें डॉ. नहेंद्र सिंह को अध्यक्ष, डॉ. चंद्रभान यादव को उपाध्यक्ष, अविनाश सक्सेना को कोषाध्यक्ष, एस.पी. सिंह राजपूत को सचिव और जितेन्द्र जौली, दुर्वास सिंह, नक्षत्र कुमार, दिनेश कुमार, राजवीर सिंह, लोकेश कुमार, मनोज कुमार, आकाश शर्मा, एन.ए. खान, नसीम, सत्येंद्र मौर्य, नसीम वारसी को सदस्य चुना गया।

म.प्र. में राज्य स्तरीय सांस्कृतिक समारोह का आयोजन

ग्वालियर : मध्यप्रदेश प्रगतिशील सांस्कृतिक मंच द्वारा 23 जून को ग्वालियर के विश्वविद्यालय स्थित गालिब सभागार में राज्य स्तरीय सांस्कृतिक समारोह का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन जीवाजी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डा. प्रकाश सिंह बिसेन द्वारा किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता नेशनल स्कूल आफ ड्रामा के छात्र रहे एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के म.प्र. राज्य सचिव कामरेड प्रताप सामल रहे। यह कार्यक्रम सुबह से देर शाम तक चलता रहा। कार्यक्रम में प्रदेश के 8 जिलों से आये सांस्कृतिक मंच के लगभग 125 कलाकारों ने विभिन्न नाटक, सामूहिक गायन, एकल गायन, मूक अभिनय एवं नृत्य नाटिका के माध्यम से अपनी कला का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम के दौरान शहर के विभिन्न गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

राज्य स्तरीय इस सांस्कृतिक समारोह में विभिन्न जिलों से 5 नाटकों का मंचन किया गया जिनमें सद्गति, नमक का दरोगा, कबीरा खड़ा बाजार में, लाश और सदाचार का ताबीज प्रमुख थे। वहीं लगभग 15 से अधिक समूह गायनों की प्रस्तुति हुई, जिनमें 'मुश्किल हालातों से डरना कैसा', 'जागा है इंसान, जमाना बदल रहा', 'जागा रे जागा', 'दरबारे वतन में' आदि प्रस्तुतियों की काफी सराहना की गयी। वहीं किसान आत्महत्याओं पर आधारित माइम, बाल श्रम और बेटी बचाओ का संदेश देते हुए डांस ड्रामा एवं 'गंगा बहती हो क्यों' गाने पर नृत्य ने दर्शकों का मन मोह लिया।

कॉमरेड प्रताप सामल ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि आज कला जगत में कला और कलाकार को लेकर बहुत ही भ्रम की स्थिति है। यह कहा जाता है कि कला और कलाकार को राजनीति से दूर रहना चाहिए जबकि कला कभी भी राजनीति से अलग नहीं हो सकती बल्कि राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक क्षेत्र की तमाम बुराइयों को कलात्मक ढंग से अभिव्यक्त करना और जनमानस को इनके खिलाफ खड़ा होने के लिए प्रेरित करना ही सही अर्थों में कला का कार्य है। जो भी महान कलाकार हुए हैं उन्होंने तत्कालीन व्यवस्था के खिलाफ आवाज उठाई है। चाहे वे मुंशी प्रेमचंद हों, शरतचंद्र हों या कोई और। उन्होंने कहा कि कला और साहित्य का काम मानव मन की सूक्ष्म भावनाओं को विकसित करना है, इसलिए आज ऐसे कार्यक्रमों की जरूरत है। उन्होंने सभी कलाकारों से अच्छे कलाकार के साथ-साथ अच्छे इन्सान बनने की एवं राजनीतिक- सांस्कृतिक आंदोलन से जुड़कर इस दौर की तमाम कुरीतियों, अंधविश्वास, जातिवाद, साम्प्रदायिकता के खिलाफ लड़ने का आह्वान किया और आम शोषित-पीड़ित जनता के पक्ष में खड़े होने की अपील की।

कार्यक्रम को जीवाजी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. प्रकाश सिंह बिसेन ने सम्बोधित करते हुये कहा कि आज शिक्षा-संस्कृति को बचाने के लिए एक व्यापक जन-आंदोलन चलाने की जरूरत है। कार्यक्रम का संचालन श्रुति शिवहरे और मनीष श्रीवास्तव ने किया।

गुना विधि महाविद्यालय की मान्यता रद्द की जाने और फीस बढ़ोतरी के खिलाफ छात्र आन्दोलन की राह पर

गुना (म.प्र.) : इस सत्र के प्रारम्भ में ही बी.सी.आई.और कॉलेज प्रशासन की लापरवाही के चलते जीवाजी विश्वविद्यालय द्वारा गुना लॉ कॉलेज के साथ साथ प्रदेश के पांच शासकीय महाविद्यालयों की मान्यता रद्द कर दी गई है जिसके चलते कानून की पढ़ाई करने वाले सैकड़ों छात्रों का भविष्य अधर में लटक गया है। दूसरी ओर, माध्यमिक शिक्षा मंडल ने स्कूल बोर्ड परीक्षा शुल्क 80 गुना तक बढ़ा दी है।

मान्यता बहाली और बढ़ी हुई फीस वापस लेने की मांग को लेकर छात्र संगठन ऑल इण्डिया डीएसओ द्वारा पिछले दस दिनों से जोरदार आंदोलन चलाया जा रहा है। कॉलेज गेट के पास छात्रों द्वारा छात्र श्रृंखला बनाई गई। कॉलेज प्रशासन और जिला प्रशासन को ज्ञापन देकर समस्या के निराकरण की मांग की गई। अभिभावकों और नागरिकों के बीच हस्ताक्षर अभियान चलाया गया जिसमे बड़ी संख्या में हस्ताक्षर कर लोगों द्वारा आंदोलन को समर्थन दिया गया। कॉलेज की मान्यता बहाली को लेकर बीसीआई को पत्र लिखने की मांग को लेकर जिला बार एसोसिएशन के अध्यक्ष को पत्र सौंपा गया। उन्होंने आंदोलन को समर्थन दिया और बीसीआई को पत्र लिखने का आश्वासन दिया। साथ ही साथ बोर्ड परीक्षा फीस बढ़ाने के खिलाफ भी संगठन द्वारा स्कूली छात्रों के साथ मिलकर आंदोलन चलाया जा रहा है। आंदोलन अभी भी जारी है। इसके लिए हस्ताक्षर अभियान, छात्र श्रृंखला, धरना-प्रदर्शन आदि छात्रों द्वारा किये जा रहे हैं। आंदोलन को शहर की जनता, छात्रों और बुद्धिजीवी लोगो का जोरदार समर्थन मिल रहा है।

मिड-डे मील कार्यकर्ताओं के आन्दोलन की जीत

महेंद्रगढ़ (हरियाणा) : 20 जून को अपनी मांगों को लेकर हरियाणा संयुक्त कर्मचारी मंच और एआईयूटीयूसी से सम्बद्ध मिड-डे-मील कार्यकर्ता यूनियन हरियाणा की ओर से भिवानी, गुड़गांव, हांसी, रेवाड़ी, सोनीपत आदि विभिन्न जिला मुख्यालयों पर विरोध प्रदर्शन और महेन्द्रगढ़ में शिक्षा मंत्री प्रो. रामबिलास शर्मा के आवास के सामने बेमियादी धरना यूनियन की प्रदेश अध्यक्ष पुष्पा देवी की अध्यक्षता में पिछले 9 दिन से जारी था। इससे पहले वे वित्तमंत्री, महिला एवं बाल विकास मंत्री का भी द्वार खटखटा चुकी थी। मुख्यमंत्री को बार-बार ज्ञापन भेजे गए। इस आंदोलन के दबाव में आखिर हरियाणा सरकार ने 27 जून को मानदेय में एक हजार रुपए की बढ़ोतरी करने का परिपत्र जारी किया है। 28 जून को सायंकाल धरना स्थल पर पहुंचकर स्वयं शिक्षा मंत्री प्रो. रामबिलास शर्मा ने मिड-डे मील कार्यकर्ताओं को साल में दो ड्रेस देने और छुट्टियों का पैसा नहीं काटने का आश्वासन दिया। इस आश्वासन पर यूनियन ने भीषण गर्मी में 9 दिन से जारी धरने को 'चंडीगढ़ चलो' के गगनभेदी नारों के साथ समाप्त कर दिया।

आगामी विधानसभा सत्र के समय यूनियन की ओर चंडीगढ़ में जोरदार प्रदर्शन किया जाएगा। सरकारी कर्मचारी का दर्जा, 18000 रुपये मासिक न्यूनतम वेतन, पेन्शन आदि बाकी मांगों को भी मानने के लिए सरकार पर दबाव बनाया जाएगा। किसी को भी हटाया न जाने और जो हटा दी गई है उन्हें वापस काम पर लेने की मांग की गई। शिक्षामंत्री से यूनियन ने यह भी मांग की कि वे प्रधानमंत्री को पत्र लिखकर मिड-डे मील कर्मियों के मानदेय में केंद्र सरकार का हिस्सा 600 रुपये से बढ़ाकर कम से कम राज्य सरकार के बराबर 2900 रुपए महीना करने का अनुरोध करें।

महेन्द्रगढ़ : धरने पर आश्वासन देते हुए शिक्षामंत्री प्रो. रामबिलास शर्मा

यूनियन के सलाहकार कॉ. राजेंद्र सिंह एडवोकेट, हरियाणा संयुक्त कर्मचारी मंच के महासचिव सूबे सिंह के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल शिक्षा मंत्री के धरने पर आने से पहले उनके आवास पर मिला और उनसे मिड-डे मील कर्मियों की ज्वलंत समस्याओं के बारे में बातचीत की। एआईयूटीयूसी के राज्य प्रधान कॉ. सत्यवान के अलावा राज्य सचिव हरि प्रकाश, मेहरसिंह हिसार, राजकुमार भिवानी, बलवीर सिंह सोनीपत, शेर सिंह व सुभाषचंद्र महेंद्रगढ़, बलराम रेवाड़ी, किसान नेता बलवीर सिंह चंद्रपुरा, रामकुमार रेवाड़ी आदि साथियों और यूनियन की राज्य प्रधान पुष्पा देवी, महासचिव ओमवती, कमलेश सोनीपत, मीरा देवराला, इंदिरा खुडाना, सुरसती रेवाड़ी, पिंकी, मुन्नी, निर्मला, संतोष, मीरा, अजीता, सुनीता, प्रेमलता ने भी सभा को संबोधित किया। धरने पर कार्यकर्ताओं ने जोशीले व प्रेरक गीत गाए। मिड-डे मील कार्यकर्ताओं के आन्दोलन की सफलता के लिए प्रदेश प्रधान पुष्पा देवी ने सभी का धन्यवाद किया और बधाई दी। साथ ही उन्होंने कहा कि यह आंशिक जीत है। इतने मामूली से पैसों में आज की महंगाई में परिवार का गुजारा नहीं हो सकता। जब तक सभी मांगें पूरी नहीं हो जाती, आन्दोलन जारी रहेगा।

महेन्द्रगढ़

गुड़गांव

हांसी, जिला हिसार

भिवानी

बिजली, पानी, सड़क की समस्या के समाधान की मांग पर प्रदर्शन

देवास : एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) के द्वारा जन समस्याओं को लेकर विरोध प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शन में मुख्य रूप से मजदूर बस्तियों में पीने के पानी की समस्या, बढ़े हुए बिजली के बिलों, कच्ची सड़कों पर फैली कीचड़ और नाली सहित ठेकेदारी व पट्टे और कुटी में धांधली की समस्याओं को उठाया गया।

प्रदर्शन को सम्बोधित करते हुए कॉ. सुनिल विश्वकर्मा ने बताया कि सरकार आम जनता के खिलाफ ही नीतियां बना रही है। विज्ञान महाविद्यालय का स्थानांतरण सुनसान इलाके में करना इसी नीति का एक हिस्सा है। कॉ. मनोहर सिंह ने कहा कि सरकार की नीतियों से आज गरीबों की आमदनी तो नहीं बढ़ रही लेकिन बिजली के बढ़े बिल, डीजल पेट्रोल के दाम और आम इस्तेमाल की चीजों के बढ़े हुए दाम गरीबों की कमर तोड़ रहे हैं। पार्टी की जिला कमेटी सदस्य कॉ. वाणी जाधव ने कहा कि कांग्रेस के कुशासन से तंग आकर जनता ने भाजपा को सरकारी गद्दी सौंपी थी, लेकिन भाजपा और कांग्रेस दोनों केवल पूंजीपतियों के हित में ही नीति बनाती हैं। इसी के चलते बिजली विभाग को कंपनी में तब्दील कर बिजली के दाम लगातार बढ़ाए गए। पेट्रोल, डीजल व रसोई गैस के दाम बढ़ाए जा रहे हैं। आम आदमी की जेब का पैसा कंपनी मालिकों के खजाने में पहुंचाया जा रहा है। मजदूर गरीब और आम आदमी को देने के लिये इनके पास केवल कोरे जुमले बचे हैं। इसलिए मजदूर आंदोलन को संगठित करने के सिवा बचने का दूसरा कोई रास्ता नहीं है।

प्रदर्शनकारियों को पार्टी के जिला सचिव कॉ. हिमांशु श्रीवास्तव ने भी संबोधित किया। सयाजी द्वार के सामने से सभी एक रैली के रूप में कलेक्टर कार्यालय पहुंचे जहां कॉ. पूर्णिमा जाधव ने 17 सूत्रीय मांगों के ज्ञापन का वाचन किया तथा एसडीएम को ज्ञापन सौंपा।

कार्यक्रम का संचालन कॉ. विनोद प्रजापति ने किया।

शैक्षणिक समस्याओं पर परिचर्चा

भोपाल (म.प्र.) : ऑल इंडिया सेव एजुकेशन कमेटी (एआईएसईसी) की मध्य प्रदेश इकाई द्वारा 24 जून को स्थानीय जीटीबी काम्प्लेक्स में 'वर्तमान शैक्षणिक स्थिति व हमारा फर्ज' विषय पर एक परिचर्चा रखी गयी। एआईएसईसी के देवाशीष राय ने अपने संबोधन में कहा की वर्तमान में सरकारी नीतियों के फलस्वरूप शिक्षा पर तीव्र हमला हो रहा है। एक तरफ, प्राथमिक स्तर से पास-फेल प्रणाली खत्म करने से बच्चों की नीव कमजोर हुई है, वहीं दूसरी तरफ, सरकारी स्कूलों को बंद कर शिक्षा को आम आदमी की पहुँच से दूर किया जा रहा है। उच्च शिक्षा में स्वायत्तता के नाम पर अनुदान खत्म किया जा रहा है और स्वायत्तता के विकृत स्वरूप को स्थापित कर शिक्षा में राजनैतिक दखलअंदाजी को बढ़ावा दिया जा रहा है और एक विशेष संगठन के विचारों के अनुरूप तर्कहीन मिथ्या बातों को शिक्षा के पाठ्यक्रम में घुसेड़ा जा रहा है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग(यूजीसी) को खत्म कर उच्च शिक्षा आयोग 'हेफा' (एचईएफए), एचईईआरए लाकर विश्विद्यालयों को मिलने वाला अनुदान खत्म कर उनको अपने संसाधन खुद जुटाने के आधार पर भारी भरकम फीस-फण्ड वसूलने को विवश किया जा रहा है। इसके चलते कॉलेजों में बेतहाशा फीस वृद्धि होगी एवं एक बड़ा तबका शिक्षा से वंचित रह जायेगा। इन सब जनविरोधी शिक्षा नीतियों के खिलाफ एक जबरदस्त शिक्षा बचाओ आन्दोलन संगठित करना वक्त का तकाजा है। इसी जरूरत को पूरा करने के लिए एआईएसईसी देशभर में शिक्षाविदों, न्यायविदों, आम शिक्षाप्रेमी लोगों और छात्रों को लेकर एक बड़ा आन्दोलन शिक्षा व मानवता को बचाने के लिए संगठित करने का प्रयास कर रही है।

परिचर्चा की अध्यक्षता कर रहे एआईएसईसी के राज्य संयोजक डॉ रामावतार शर्मा ने कहा कि मध्य प्रदेश में भी शिक्षा पर तीव्र हमले हो रहे हैं। शिवराज सरकार प्रदेश के 1 लाख 8 हजार स्कूलों को बंद करने की योजना बना चुकी है। पिछले साल लगभग 10 हजार स्कूल बंद कर दिए गए। मध्य प्रदेश में कुकुरमुत्तों की तरह न केवल निजी स्कूल बल्कि निजी कॉलेज व निजी विश्वविद्यालय भी खुल गए हैं जिनकी फीस दे पाना एक आम परिवार के वश की बात नहीं है। उन्होंने शिक्षा, संस्कृति और मानवता को बचाने के लिए मध्य प्रदेश में भी इस आन्दोलन को विस्तारित व संगठित करने की छात्रों, शिक्षकों व शिक्षाप्रेमी लोगों से अपील की। परिचर्चा में प्रदेश के विभिन्न जिलों से आये एआईएसईसी के कार्यकर्ताओं ने भी बात रखी जिनमें मोहरसिंह, विद्या, भावना दीक्षित, अजय श्रीवास्तव प्रमख थे।

एआईकेकेएमएस कार्यकर्ताओं का क्षेत्रीय सम्मेलन सम्पन्न

छुर्ग (छ.ग.) : 29 मई को पखांजूर जिला कांकेर में एआईकेकेएमएस का क्षेत्रीय कार्यकर्ता सम्मेलन सम्पन्न हुआ । किसानों की समस्याओं पर विचार-विमर्श किया गया और ऑल इण्डिया केकेएमएस को मजबूत बनाने का संकल्प लिया। एआईकेकेएमएस के प्रमुख संगठक व ऑल इंडिया कमेटी के सदस्य कॉ. पथिक अधिकारी ने पिछले तीन साल से संगठन के द्वारा किए गए आंदोलन व कार्यों की जानकारी दी।

सम्मेलन में मुख्य वक्ता के रूप में कॉ. विश्वजीत हारोडे उपस्थित थे। उन्होंने किसानों की समस्याओं व उसके कारणों को सबके सामने रखते हुए संगठन को मजबूत करते हुए किसान आंदोलन को जोरदार तरीके से बढ़ाने की अपील की। सम्मेलन में संगठन की क्षेत्रीय कमेटी का गठन किया गया।

R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2018-2020
Posting at New Delhi PSO on 7–8 and 22–23 Fortnightly

जनता और कॉमरेडों के प्रति असीम प्यार रहने से, अनुकरणीय क्रान्तिकारी चरित्र होने से थी वे एक सच्ची जन नेत्री

(पृष्ठ 3 का शेष)

क्रांतिकारी संघर्ष में बहुत दूर तक आगे नहीं बढ़ पायीं। लेकिन कॉमरेड प्रणती भट्टाचार्य को यह मौका नहीं मिला। इसका कारण मैंने आपको पहले ही बताया है। वे सस्ती लोकप्रियता और पब्लिसिटी से बचते हुए चुपचाप काम किया करती थीं। बाहरी रूप से उनके होनहार होने की थाह पाना मुश्किल था; इसके अलावा वे उस समय कुछ हद तक शर्मीली भी थीं। अगर कॉमरेड शिवदास घोष उनसे मिले होते, तो वे बहुत खुश और प्रसन्न होती। वे एक महिला थीं लेकिन तथाकथित महिलावादी गुणों का कोई नामोनिशान उनमें नहीं था। दयालुता और दृढ़ता के साथ वे एक आकर्षक मानवीय व्यक्तित्व रखती थीं।

उस समय कॉमरेड स्वप्न घोष ने अपनी नौकरी छोड़ दी थी और एक पूर्णकालिक कार्यकर्ता बन गये थे। पार्टी सेण्टर बड़ी कठिनाइयों से गुजर रहा था; पार्टी की वित्तीय ताकत भी नहीं थी। पड़ोसियों ने थोड़ी सी मदद की। कॉमरेड प्रणती भट्टाचार्य पूरे कस्बे में पैदल घूमती थीं। मैंने कामरेडों से सुना है कि कॉमरेड प्रणती भट्टाचार्य पार्टी के काम करने के लिए पूरे दिन एक इलाके से दूसरे इलाके में घूमती रहती थीं। सेण्टर में लौटने के बाद, एकमात्र महिला कॉमरेड होने के नाते वे सेण्टर में घरेलू काम करती थीं। वहां तंगहाली, अभाव और कंगाली थी, लेकिन यह उनको जरा भी कुप्रभावित नहीं कर पाया। उन्होंने गीत गाते हुए, कविताएं पढ़ते हुए, बिना रुके, बिना झुके बड़ी खुशी के काम किया।

कॉमरेड बुलबुल ऐच ने कॉमरेड प्रणति भट्टाचार्य के विवाहित जीवन में जो सुंदरता देखी वह सुंदरता बड़े शानदार ढंग से व्यक्त की है – यह अनुमान लगाना संभव नहीं था कि उनका पति कौन है, उनका अपना बच्चा कौन है। मैं उसके विचार से पूरी तरह से सहमत हूँ। कॉमरेड प्रणती भट्टाचार्य का विवाहित जीवन और अपने बच्चे के प्रति दृष्टिकोण अनुकरणीय था। जब वे पार्टी के काम के लिए बाहर जाती थीं, तो वे अपने बच्चे को बस्ती में, झुग्गी-झोपड़ियों में दूसरों के घरों में छोड़कर जाती थीं। इस तरह उन्होंने अपने बच्चे की परवरिश की थी। मैं आपको इस संदर्भ में बताना चाहता हूँ कि वे दो साल से हत्यारे रोग से लड़ रही थीं, लेकिन एक बार उसने यह नहीं कहा कि वे अपने बेटे को देखना चाहती हैं। उन्होंने मिलने के लिए अन्य कामरेडों को बुलाया और पार्टी के काम के बारे में पूछताछ की। वे जानती थीं कि मौत उनका दरवाजा खटखटा रही थी और उन्होंने कॉमरेडों को उस संभाव्य घटना का सामना करने के लिए मानसिक और सांगठनिक रूप से तैयार कर दिया था। लेकिन उसने कभी नहीं कहा, "मैं अपने बेटे से मिलना चाहती हूँ।" कह भी देती, तो उसमें उन्होंने गलत कुछ नहीं किया होता। यह स्वाभाविक होता। एक दिन मैंने उससे पूछा था, "क्या मैं आपके बेटे को बुलाऊँ?" उन्होंने जवाब दिया था, "नहीं, वह पार्टी का काम कर रहा है, उसे सीखने दीजिए कि कैसे काम किया जाता है। वह यहाँ क्या करेगा?" मृत्यु शय्या पर पड़ी एक मां के ऐसे एक मानसिक रुख का यह कितना शानदार उदाहरण है। यह एक अमूल्य खजाना है, जो कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाओं की रचना है। उनका बच्चा भी इसी तरह का है। उन्होंने यह भी कभी नहीं कहा, "मैं अपनी मां के साथ रहना चाहता हूँ।" मैंने उसे दो बार बुलाया। वह उनसे मिलने आया और वापस चला गया। उनकी मृत्यु से दो दिन पहले मैंने उसे बुलाया। वह आया, उनसे मुलाकात की और कहा, "मैं वापस जा रहा हूँ, मुझे वहाँ कामरेडों की देखभाल करनी है; अंतिम संस्कार का इन्तजाम करना है।" मुझे आशा है कि पुत्र अपनी मां के सपने के साथ जीएगा, चरित्र में महान बनेगा। उन्होंने मां के प्यार-दुलार के साथ ऐसे कई छोटे बच्चों को पाला-पोसा है। कभी-कभी कोई बच्चा जिद्दी बन गया, और माता-पिता असहाय और चिंतित महसूस करते थे; ऐसे कई उदाहरण हैं जब इस तरह के बच्चे को कॉमरेड प्रणती भट्टाचार्य के पास भेजा गया; प्यार और स्नेह के उनके चंगा करने वाले जादुई स्पर्श से बच्चा पूरी तरह से बदल गया। मुझे आशा है कि ऐसे बच्चे उनके प्यार का सम्मान करेंगे और पार्टी के लिए बड़ी जिम्मेदारियों को अपने कंधों पर लेंगे। कॉमरेड शिवदास घोष ऐसा निर्वैयक्तिक, नैतिक मातृत्व चाहते थे। उन्होंने महिलाओं का आह्वान किया था, "शरतचंद्र के साहित्य की बिंदू और नारायणी की तरह बनो।" ऐसा नैतिक मातृत्व कॉमरेड प्रणती भट्टाचार्य में साक्षात देखने को मिला था। मैं इसे दृढ़ विश्वास के साथ बताता हूँ। उन्होंने कहीं भी अपना स्वयं का कोई दिखावा नहीं किया कि उन्होंने इन सभी चीजों को किया। उनकी मृत्यु से कुछ ही दिन पहले वे एक नव विवाहित जोड़े से मिलीं और उनको एक मूल्यवान दिशानिर्देश प्रदान किया, जिनसे वे बहुत घनिष्ठ थीं और उनके प्रति स्नेही थीं। उन्होंने मुझे इसके बारे में बताया। मुझे आशा है कि वे भी उनके दिशानिर्देश का सम्मान करेंगे।

मैं एक और बिंदु को छू रहा हूँ। मैंने देखा है कि उन्होंने कभी भी किसी भी कॉमरेड के बारे में शिकायत नहीं की है। उनकी एकमात्र शिकायतें खुद से थी, "मैं बेहतर तरीके से क्यों काम नहीं कर सकती? कॉमरेड शिवदास घोष ने इतने सारे महान सबक सिखाए, इतनी सारी मूल्यवान चर्चाएं की; आपने कई चर्चाएं सुनी भी हैं। मैं तदनुसार क्यों काम नहीं कर सकती?" इस तरह उसकी शिकायत खुद से थी। यहाँ मैं कुछ कहना चाहता हूँ। एक बार मैंने उनके दिल को चोट पहुंचाई। मुझे पता था कि वे अपने सभी कामरेडों से तहेदिल से प्यार करती थीं। वे अपने प्यार देने में कामरेडों में भेदभाव नहीं करती थीं। फिर भी एक कामरेड आया और मुझे बताया कि वह कॉमरेड प्रणती भट्टाचार्य में कुछ पक्षपात देख रहा था। मुझे विश्वास नहीं हुआ, फिर भी मैंने उन्हें उसका वह संदेश पहुंचाया। उन्होंने मुझे आंशिक रूप से आश्चर्यचकित और आंशिक रूप से उदास देखा और कहा, "मुझे यह देखना है कि उसने ऐसा क्यों कहा।" उन्होंने इससे ज्यादा कुछ और नहीं कहा। अगले दिन वे पुरुलिया वापस लौट गई। मैं कुछ हद तक बुरा महसूस कर रहा था। अगले दिन मैंने उसे फोन पर बुलाया। अब मैं इस घटना के बारे में उनकी डायरी से पढ़ूंगा। 1 जनवरी, 2015 को उन्होंने लिखा, "मेरा दिमाग परेशान है। मेरे बारे में प्रश्न उठाए गए हैं। ऐसा लगता है कि

मृत्यु शय्या पर भी थी उन्हें सिर्फ पार्टी, अपने नेताओं व कॉमरेडों की खैरियत की ही चिंता

कहीं कुछ गलती हुई है। मुझे नहीं पता कि सच कुछ दिन प्रकट होगा या नहीं।" अगले दिन उसने लिखा, "प्रभासदा ने सुबह में फोन किया। उन्होंने मुझसे पूछा, "तुम उदास क्यों हो?" वे समझ गये कि मेरा दिमाग परेशान है। उन्होंने कहा, "जीवन में कई समस्याएं आ जाएंगी। गलत आलोचना भी आएगी। लेकिन अपने दिमाग को परेशान न होने दें।" उन से बात करने के बाद मुझे बेहतर लगा।" ध्यान से सुनो, मैं आगे क्या पढ़ रहा हूँ। उन्होंने लिखा, **"मेरे लिए कोई खास व्यक्ति नहीं है जो मेरे लिए प्रिय है। मैं सबको बहुत प्यार करती हूँ। मैं दुखी हूँ, क्यों वे कॉमरेड इसे समझ नहीं सके?"** ऐसी थी कॉमरेड प्रणती भट्टाचार्य। मैं एक और घटना का जिक्र कर दूँ। मेदिनीपुर में डीएसओ और डीवाईओ की एक स्टडी क्लास थी। बहुत गर्मी थी। वे इसमें भाग लेना चाहती थीं, लेकिन उनका पैर टूट गया था। उन्होंने फोन किया कि वे नहीं आ सकती। मैंने जाने और उनसे मिलने का फैसला किया। कॉमरेड हैदर मेरे साथ थे। हम पुरुलिया गए। उस गर्म मौसम में वे अपनी चोट के बावजूद हमारी देखभाल करने के लिए दौड़धूप कर रही थीं। नतीजतन उनके पैरों में दर्द और भी बढ़ गया और मैंने उनको डांटा। उन्होंने डायरी में लिखा, **"अन्य हमारे नेताओं के साथ हमारे जो संबंध हैं, उनको दूसरे समझ नहीं सकते हैं। हमारी मुख्य चिंता यह है कि उनके लिए थोड़ा सा आराम कैसे मुहैया कराया जाए। हम तब कुछ और नहीं सोच सकते हैं। हम उन्हें आराम मुहैया कराने के लिए अपने जीवन तो कुर्बान कर सकते हैं। क्या मेरा प्यार कुछ अनुचित है?** मुझे नहीं पता। हैदरदा एक बीमार आदमी हैं। उन्होंने सफर में बहुत कष्ट भुगतना पड़ा है। प्रभासदा भी इस बेहद गर्मी में इतनी दूर से सफर से थक कर चूर-चूर हो चुके हैं।" नेताओं के लिए ऐसी भावनाएं और जज्बात उनके चरित्र का एक और पहलू हैं। फिर अगर कोई कामरेड संघर्ष से पीछे हट रहा है, तो उन्होंने सोचा कि कॉमरेड की मदद की जानी चाहिए ताकि वह आगे बढ़ सके। विशेष कॉमरेड को जिम्मेदार ठहराए जाने की बजाय वे सोच रही थी कि वे उसकी मदद क्यों नहीं कर सकी – यह उनकी अपनी विफलता थी। उन कॉमरेडों का भी वे बड़ा सम्मान करती थीं जो पहले सक्रिय थे, लेकिन अब उम्र या बीमारी के कारण या पारिवारिक व्यस्तताओं के चलते जिनमें ठहराव आ गया है। उन्होंने हमेशा दूसरों के अच्छे गुणों को हाइलाइट किया। जब किसी ने किसी की कमी की ओर इशारा किया, तो वे तुरंत संबंधित कॉमरेड के अच्छे गुण दिखा देती थीं। उन्होंने युवा हों या बुजुर्ग, सभी लोगों का सम्मान किया। कई कॉमरेडों ने मुझे इनके बारे में लिखा, मैं भी व्यक्तिगत रूप से इन विशेषताओं के बारे में जानता हूँ। मैंने खुद देखा है कि जब किसी की प्रशंसा हुई तो वे खुश हो गई, और जब उसकी प्रशंसा हुई, तो वे शर्मिंदा सी हो गई। प्रतिस्पर्धा, जलन, ईर्ष्या-द्वेष की भावना जो बुर्जुआ व्यवस्था की देन हैं – इनमें से किसी का भी कोई नामोनिशान तक मैंने उनमें नहीं देखा।

यह भी गौरतलब है कि वे हत्यारे रोग से कैसे लड़ीं। डॉ. तरुण मंडल यहां बैठे हैं; उन्होंने बताया कि जब पहली बार दिल्ली में उनके कैंसर होने का निदान किया गया था, तो वे चिंतित थे कि इसकी जानकारी प्रणतिदी को कैसे दी जाए। डॉ. मंडल ने बताया कि उन्हें प्रणतिदी को यह खबर देने की जरूरत नहीं पड़ी, उन्होंने स्वयं इसे समझ लिया और इसे आसानी से स्वीकार कर लिया। सभी डॉक्टरों ने बताया है कि उन्होंने कभी बीमारी के बारे में कुछ नहीं पूछा। उन्होंने कभी बीमारी या इलाज के बारे में कोई सवाल नहीं उठाया। उन्होंने सोचा कि पार्टी इस मामले को देख रही है, पार्टी तय करेगी कि क्या करना है। वह इसके बारे में क्यों सोचें? निश्चित मृत्यु से रूबरू होने पर भी यह विरक्ति का भाव – यह एक बहुत बड़ा उदाहरण है! डॉ. तरुण मंडल ने बताया कि उन्हें पहले अपने दर्द की तीव्रता का एहसास नहीं था, क्योंकि इसकी कोई बाहरी अभिव्यक्ति नहीं थी। यह उनके जीवन के आखिरी चरण में हाल था। यह भी एक असाधारण उदाहरण है। जिन लोगों ने यह देखा है, वे जानते हैं कि कैंसर रोगियों के दु:ख-दर्द कितना असहनीय होता है। यहां तक कि जब उन्हें तीव्र दर्द था, तब भी हमने उनमें कोई आँसू, बेचैनी, पछतावा या दर्द की बाहरी झलक नहीं देखने को मिली। उन्होंने चुपचाप सब कुछ सहन किया। जब पूछा गया, तो वे जवाब देती थीं कि केवल थोड़ा सा दर्द है। उन्होंने कहा 'थोड़ा सा', लेकिन हकीकत में यह असहनीय था। उन्होंने मुस्कुराते हुए चेहरे से यह कहा। मृत्यु के क्षण तक उनका आचरण ऐसा ही था। उनकी चिंता यह थी कि अपनी पीड़ा व्यक्त करके या उन्हें इसके बारे में बता कर दूसरों को परेशान न किया जाए। कितना चारित्रिक बल है, यह कितनी महान मानसिकता है! वे पूरी रात सो नहीं पाती थीं, लेकिन जो उनकी तीमारदारी कर रहे थे, वे जागना चाहते, तो वे उन्हें ऐसा नहीं करने देती थीं। जब तक वे सक्षम थी, वे लड़खड़ाती हुई जैसे-तैसे बाथरूम में पहुंच जाती थीं, वे दूसरों को नहीं बुलाती थीं। उन लोगों के साथ जो उनसे मिलने गए थे, उन्होंने पार्टी के काम के बारे में चर्चा की, कई सुझाव दिए। लेकिन जबरदस्त दर्द में भी संगीत के प्रति उनका बहुत अच्छा आकर्षण था। लगभग हर दिन उन्होंने कॉमरेडों के साथ गानों की महफिलों की व्यवस्था की। उन्होंने संगीत कैसेट सुनी; एक बार थोड़ी देर उन्होंने अपनी आवाज भी दी। अपनी युवा अवस्था के दिनों में उन्हें संगीत में दिलचस्पी थी, उनकी अच्छी आवाज थी और वे गायिका बनना चाहती थीं। जब वे पार्टी से जुड़ी, तो उन्होंने क्रांतिकारी जीवन को अपने संगीत के उद्देश्य के लिए स्वीकार कर लिया। उनका संगीत जीवन उसके क्रांतिकारी जीवन के साथ घुलमिल गया था। अपने जीवन के आखिरी चरण में उन्होंने प्रत्येक आगंतुक को गाना गाने के लिए मनाया चाहे उनकी क्षमता थी या नहीं। वे पुराने समय के संगीत, शास्त्रीय संगीत, रवींद्रनाथ और नजरुल के संगीत को सुनती थीं। मैंने सुना है कि उसकी मृत्यु से दो दिन पहले उन्होंने कॉमरेड कुमकुम से पूछा था कि जो इस घर में है, वह गाएगा; वे एक अच्छी गायिका हैं, लेकिन अगर वे कोई धुन चूक गई, या गीत के बोल भूल गई, तो कॉमरेड प्रणती भट्टाचार्य ने उसे तुरंत वह धुन या गीत का बोल बता दिया। ऐसी थी उनकी मानसिकता। उन्होंने अपनी बीमारी के बारे में चिंता न करते हुए, बल्कि पार्टी के काम के बारे में सोच-विचार और चिंतन करते हुए, विभिन्न किताबें पढ़तें हुए या किताबें पढ़वाते हुए और संगीत साधना करते हुए बीमारी के दिनों को बिताया।

वे शिवपुर सेण्टर में रही। दिन के दौरान मैं आमतौर पर उनसे मिल नहीं पाता था। वे रात को सो नहीं पाती थीं और वे दिन में लेटी रहती थीं। मैंने उन्हें परेशान नहीं किया। जब मैं पार्टी ऑफिस से शाम को साढ़े 8-9 बजे लौटता, तो मैं उनसे मिलता था। वे उत्सुकता से इस समय का इंतजार कर रही होती थीं। वे एक लाइलाज बीमारी से ग्रस्त थीं, भीषण दर्द

(शेष पृष्ठ 7 पर)

कॉ. शंकर साहा का भाषण ...

(पृष्ठ 1 का शेष)

एक भारत सहित कई देशों ने अभी तक 'सामाजिक सुरक्षा (न्यूनतम मानक) कन्वेंशन, 1952' पर आईएलओ कन्वेंशन 102 द्वारा अभी तक मंजूरी नहीं दी है। सभ्य सामाजिक सुरक्षा संरक्षण के बिना "सभ्य काम और टिकाऊ विकास के लिए 2030 एजेंडा" के लिए आईएलओ के दृष्टिकोण की असल में कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

बाजार संचालित साम्राज्यवादी वैश्वीकरण के तीन दशकों के अनुभव ने काफी हद तक प्रदर्शन कर दिया है कि इसने दुनिया भर में अमीरों और गरीबों के बीच असमानता को बढ़ा दिया है। ऐसा इसलिए है क्योंकि वैश्वीकरण ने कुछ एक बड़े-बड़े कॉर्पोरेट दिग्गजों के लिए अधिकतम मुनाफा बटोरने और बहुसंख्यक मेहनतकश लोगों का खून निचोड़ने के लिए वस्तुगत हालात पैदा किये हैं। अब यह स्पष्ट है कि वैश्वीकरण पूरी दुनिया के कामकाजी लोगों के जीवन में तबाही लाया है।

कामकाजी लोग अब तक आईएलओ के माध्यम से हासिल अधिकारों और विशेषाधिकारों को हल्का किये जाने का सख्त विरोध करते हैं। लेकिन मजदूर वर्ग का नेतृत्व दुनिया भर में मेहनतकश लोगों पर अभी भी कायम किया जाना है ताकि जिस व्यवस्था ने उनको शोषण के दुष्चक्र में डाल दिया है उस व्यवस्था के खिलाफ गहन लड़ाई छड़ने के लिए उन्हें पर्याप्त रूप से लैस किया जा सके और शोषण करने वाली प्रणाली को 'नहीं' कहने के लिए उन्हें तैयार किया जा सके।

इजरायली हत्याकाण्डों और अत्याचारों के खिलाफ फिलीस्तीनियों के साथ एकजुटता और निंदा-सह-विरोध में खड़े होने के लिए कुर्द और फिलिस्तीन के लिए ग्लोबल यूनियनों के गठबंधन के निमंत्रण पर संयुक्त राष्ट्र के सामने 4 जून, 2018 को आयोजित आईएलओ के 107वें सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों की सभा में फिलिस्तीनियों के साथ भारतीय श्रमिकों की एकजुटता व्यक्त करते हुए कॉमरेड शंकर साहा ने संबोधित किया। उनके भाषण का पाठ नीचे दिया गया है :

प्रिय दोस्तो, फिलिस्तीनियों के अपने देश में स्वतंत्रता, गरिमा और सम्मान के साथ रहने के लिए लम्बे अर्से से चलाये जा रहे कठोर संघर्ष के प्रति मैं आपको भारत के मेहनतकश लोगों की एकजुटता का इजहार करता हूं। दोस्तो, हमें याद रखना होगा कि इजराइल साम्राज्यवादी- जीयोनिस्ट धुरी द्वारा रचे गए षडयंत्र की करतूतों से पैदा हुआ था। साम्राज्यवादियों के समर्थन से 1948 में इजरायल राज्य की स्थापना एक ऐसे क्षेत्र में हुई थी जहां फिलिस्तीनी सदियों से रह रहे थे। जब राज्य की स्थापना हुई, तो इजराइल ने 700,000 से अधिक फिलिस्तीनियों अर्थात् लगभग 80% मूल अरब आबादी को उनके अपने देश से निकाल दिया था और 500 फिलीस्तीनी गांवों को धूल में मिला दिया था। 1956, 1967 और 1973 में लगातार युद्धों के माध्यम से, इजरायली शासकों ने आक्रामक रूप से और अवैध रूप से पूरे ऐतिहासिक फिलिस्तीन पर कब्जा कर लिया था और इसे इजरायल में मिला लिया था। यह सब तब हुआ जब साम्राज्यवादी शक्तियों ने इजरायल की इस गुण्डागर्दी की ओर से आंखें मूंद ली थी। उनकी बिना कोई गलती के फिलीस्तीनियों को बेदखल कर दिया गया था और उन्हें अपने मातृभूमि से निष्कासित कर दिया गया था और शरणार्थियों के रूप में दुनिया के चारों कोनों में फैल जाना पड़ा था। 1948 के युद्ध के बाद संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा पारित प्रस्ताव नं. 194 में कहा गया था कि "जो शरणार्थी स्वदेश लौटना चाहते हैं और अपने पड़ोसियों के साथ शांति से रहने की इच्छा रखते हैं, उनको जल्द से जल्द व्यावहारिक तारीख पर ऐसा करने की अनुमति दी जानी चाहिए।" लेकिन इजरायल ने फिलिस्तीनियों के अपनी मातृभूमि पर लौटने के अधिकार को मानने से हठपूर्वक इनकार कर दिया था।

नस्ली सफाये के साथ-साथ उनकी अपनी मातृभूमियों पर कब्जे, घेराबंदी और अवरोधों की बात अगर छोड़ भी दें, तो इजरायल-फिलिस्तीन के लड़ाई-झगड़े में फिलीस्तीनियों को 1948 के *नाक्बा* (ऊथल-पुथल), 1967 के *नाक्सा* (धक्के) से शुरू करके 1970 में जॉर्डन में ब्लैक सितंबर, 1975 में लेबनान गृहयुद्ध, दो इजरायली हमलों के माध्यम से 1948 के *नाक्सा* (धक्के) के साथ शुरू होने वाले दर्दनाक अनुभवों से गुजर चुके हैं। 1978 और 1982 में लेबनान पर दो इजरायली हमलों और बाद में लेबनान से फिलिस्तीनी प्रतिरोधी तत्वों के निष्कासन, 1985 में लेबनान में फिलिस्तीनी शरणार्थी शिविरों की घेराबंदी, 1990 के दशक के शुरू में कुवैत से फिलिस्तीनियों के निष्कासन, 2009 में गाजा पर आक्रमण, आदि दर्दनाक अनुभवों से गुजरना पड़ा है। उन क्षेत्रों में जहां इजरायल ने लगातार युद्धों के माध्यम से कब्जा कर लिया था, फिलिस्तीनी लोग अपने मौलिक मानवाधिकारों से वंचित दोयम दर्जे के नागरिकों के रूप में रह रहे हैं - गरीबी में, शिक्षा और उचित चिकित्सा देखभाल से वंचित, इजरायली सैनिकों और सुरक्षा गार्डों द्वारा मनमानी हत्याओं या चोटों के हालात में रह रहे हैं। इजरायल ने फिलीस्तीनियों के आंदोलनों पर विभिन्न प्रतिबंध लगाकर उनकी मौलिक स्वतंत्रता और आजादी पर भीषण हमला किया हुआ है। इसने फिलिस्तीन लोगों के आंदोलन को स्थायी रूप से प्रतिबंधित करने के लिए एक गैरकानूनी 'दीवार' खड़ी कर दी, जो सीलबंद एन्क्लेवों में सैकड़ों हजार पुरुषों, महिलाओं और बच्चों को प्रभावी ढंग से घेरघोंट कर रख रही है। बैरियर ने नाटकीय रूप से फिलीस्तीनियों की गरीबी में वृद्धि की है और रोजगार, सिंचाई के पानी, कृषि उत्पादन और बाजार तक पहुंच, साक्षरता दर, शिक्षा तक पहुंच और मातृ-शिशु स्वास्थ्य देखभाल तक पहुंच कम कर दी है।

एक दशक से अधिक समय से बड़े भारी विनाश और नरसंहार के शीर्ष पर इजरायल ने व्यवस्थित हवाई और जमीनी हमलों से गाजा को मलबे के ढेर में बदल डाला है, उसने गाजा पर सबसे कठोर नाकाबंदी कर रखी है, यहां तक कि मानवतावादी सहायता, आवश्यक चिकित्सा आपूर्ति, शिशु भोजन इत्यादि के प्रवेश पर भी रोक लगा रखी है। पूरी दुनिया के सद्बुद्धिसम्पन्न लोगों ने इजरायल के इन कृत्यों की निंदा की। लेकिन इजरायल संयुक्त राज्य अमेरिका-नीत साम्राज्यवादी ताकतों के प्रत्यक्ष या परोक्ष समर्थन से इन आपराधिक कृत्यों को करते चला गया। किसी दंड के भय के बिना अमेरिकी संरक्षण में इजरायल हर अंतरराष्ट्रीय कायदे-कानून और मानदंड का उल्लंघन कर रहा है और संयुक्त राष्ट्र के सभी प्रस्तावों की धज्जियां उड़ा रहा है। इसने पूर्वी यरूशलेम को हड़प लिया है और "एकीकृत और पूर्ण" यरूशलेम को इजरायल की राजधानी के रूप में घोषित कर दिया है, जो संयुक्त राष्ट्र के उस आज्ञादेश का स्पष्ट उल्लंघन था जो यरूशलेम को अंतरराष्ट्रीय दर्जा प्रदान करता था। दूतावास को यरूशलेम में स्थानांतरित करने की संयुक्त राज्य अमरीका के राष्ट्रपति ट्रम्प की ताजा काली करतूत यरूशलेम की अनिवार्य अंतरराष्ट्रीय स्थिति की स्पष्ट अस्वीकृति है और यह संवाद और बातचीत के माध्यम से इजरायल-फिलिस्तीन संघर्ष के किसी भी समझौते को रोक देगी। जब वेस्ट बैंक के फिलिस्तीनियों ने रोष-आक्रोश के इजहार और विरोध प्रदर्शनों के साथ इस अमेरिकी कार्रवाई का जवाब दिया, तो इजरायल ने युद्धपोतों, टैंकों और बंदूकों से प्रदर्शनकारियों पर क्रूरता से हमला कर प्रत्युत्तर दिया। आक्रामण के ऐसे अमानवीय कृत्यों को तुरंत रोकना चाहिए। साम्राज्यवादी ताकतों को इजरायल के तुष्टिकरण की अपनी नीति छोड़नी चाहिए और इसे गाजा की गैर-कानूनी, बेरहम और नरसंहारक नाकाबंदी को उठाने और फिलिस्तीन की संप्रभु स्थिति की मांग को मानने के लिए मजबूर करना चाहिए।

अरब आबादी के अमानवीय इजरायली दमन-उत्पीड़न बंद होने और सभी कब्जे वाले क्षेत्रों से इजरायल के वापस हटने के जरिये ही मध्य पूर्व में शांति लौट सकती है। स्वदेश लौटने के अधिकार की जायज मांग, यरूशलेम में राजधानी के साथ एक संप्रभु राज्य रखने के फिलिस्तीनियों के अधिकार को मान्यता और फिलिस्तीनी शरणार्थियों के मुद्दे के लिए जायज समाधान के लिए फिलिस्तीनियों के साथ एकजुटता में एआईयूटीयूसी उनके साथ खड़ी है।

दृढ़ इरादे के साथ उन्होंने जानलेवा कैंसर का किया मुकाबला, कभी नहीं किया अपनी दुःख-तकलीफों का इजहार

(पृष्ठ 6 का शेष)

से पीड़ित थीं और आसन्न मौत का सामना कर रही थीं; मैं उन्हें सांत्वना देने के लिए क्या कह सकता हूँ! मैंने केवल उनसे पूछा, "क्या आपको कोई दर्द महसूस हो रहा है?" मुस्कुराते हुए चेहरे के साथ उनका हमेशा जवाब यही होता था कि "थोड़ा सा"। उनकी मृत्यु के बाद दो कामरेडों ने मुझे बताया कि जब तक मैं नहीं आता, वे कष्ट भुगतते हुए बिस्तर पर पड़ी रहती थीं। मेरे आगमन के समय से पहले, वे उठकर थोड़ी सी सजती-संवरती; बस मुझे एक मुस्कुराते हुए चेहरे के साथ दिखाने के लिए कि उनका हाल सब कुछ ठीक-ठाक है—शायद मुझसे मिलने की खुशी से, शायद मेरे लिए कोई परेशानी न हो। जब मैं इन चीजों के बारे में सोचता हूँ, तो मैं आश्चर्यचकित हो जाता हूँ। यह आश्चर्यजनक है कि वे ऐसे स्वाभाविक ढंग से कैसे व्यवहार कर सकी जब वे ऐसी बीमारी से ग्रस्त थी जो रोगियों में इतनी जबरदस्त पीड़ा पैदा करती है कि वे दर्द से बिलबिलाते रहते हैं और कुछ लोग अपनी जीवनलीला को समाप्त करने के लिए जहर मांगते हैं। यह सब कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाओं का नतीजा है; उन्होंने असहनीय दर्द वाली मौत का सामना करते समय एक क्रांतिकारी कैसे लड़ाई लड़ता है, इसकी एक मिसाल कायम की है। हमें इस तरह के इम्तिहान से गुजरना होगा।

अस्पताल के सूत्रों ने सूचित किया है कि उनके साथ संपर्क में आने वाले सभी डॉक्टरों, स्वास्थ्य कर्मचारियों, नर्सों और परिचरों के साथ उनके संबंध क्या थे – कुछ लोगों को उनके बच्चों से समस्याएं थीं, कुछ लोगों के अपने विवाहित जीवन में समस्याएं थीं, कुछ को अपने बीच आपसी समझदारी की समस्या थी – वे उनके साथ चर्चा किया करती थीं, उन्हें सलाह देती थीं, उन्हें मार्गदर्शन देती थीं। वे पार्टी की शिक्षाओं से उन्हें लैस किया करती थीं, उन्हें असली इन्सान की तरह जीने के लिए प्रेरित किया करती थीं। उनकी मृत्यु से सिर्फ दो दिन पहले उन्होंने एक नर्स से पूछा था कि उसकी समस्या की क्या स्थिति है, यानी, क्या उन्होंने जो मार्गदर्शन दिया था, उससे इसे हल करने में मदद मिली या नहीं। ये हम सभी के लिए अमूल्य सबक हैं। क्या हर कोई जो अस्पताल में भर्ती हो जाता है, वह सब का अभिभावक बन जाता है? जिस किसी के भी संपर्क में वे आई थीं, उन्हें अपनी आखिरी सांस के क्षण तक उन्होंने कॉमरेड शिवदास घोष की कुछ शिक्षाएं देने की कोशिश की थीं। जीवन का एकमात्र उद्देश्य यही था। जब वे शिवपुर सेण्टर से अस्पताल में आखिरी बार गई थीं, तो मुझे पता था कि वे वापस नहीं आएंगी। मैं उनसे मिलने के लिए उनके कमरे में गया था और फिर उन्हें द्वार पर मिला था। यहां तक कि उसके स्वास्थ्य की स्थिति के साथ उसने मुझे सलाह दी, "तुम यहाँ क्यों आए हो?" मैंने उनके हाथ को थामा और उन्हें बताया कि मैं उन्हें अस्पताल में मिलूंगा। उन्होंने जवाब दिया, "नहीं, आपको नहीं आना चाहिए!" डॉक्टर सुभाष दासगुप्ता ने मुझे बताया कि उन्होंने बार-बार उसे बताया कि प्रभासदा नहीं आने चाहिएं; संक्रमण का खतरा होगा। अपनी मृत्यु से ठीक पहले उन्होंने डॉ. दासगुप्ता को एक दृढ़ आवाज में बताया, **"सुभाष, आपके पास करने को ओर कुछ नहीं है। अब छोड़ो, जाने दो।"** आखिरी बार उसने पूछा, **"प्रभासदा कैसे हैं?"** सुभाष ने उनको बताया कि मैं ठीक हूँ। दूसरे शब्दों में, उनके आखिरी विचार थे, प्रभासदा और अन्य नेता अच्छे स्वास्थ्य में रहें और पार्टी के काम करने और मार्गदर्शन करने के लिए लंबे समय तक जिन्दा रहें। मेरी अनुमति से सुभाष ने उन्हें रात को सोने के लिए इंजेक्शन देने दिया। डॉक्टर, नर्स और कर्मचारी आँसू बहा रहे थे। सुभाष ने बाद में मुझे बताया कि न केवल हम, बल्कि पूरा अस्पताल उनकी मौत पर रोया था। वे सबके इतनी करीब आ गई थीं!

हम सभी अपने महान शिक्षक कॉमरेड शिवदास घोष के छात्रों के रूप में जीवन-संघर्ष कर रहे हैं। उच्च कम्युनिस्ट चरित्र हासिल करने के लिए हम एक-दूसरे से सीख रहे हैं कि प्रत्येक इन अमूल्य क्रांतिकारी शिक्षाओं को अपने जीवन में कितनी दूर तक लागू करने में सक्षम हुआ है। इस स्मृति सभा में मैंने आपके सामने कॉमरेड प्रणति भट्टाचार्य के जीवन-संघर्ष से कुछ अध्याय रखे, ताकि हम जो जीवित हैं, वे समझ सकें और प्रेरित हो सकें कि केसे किसी के लिए कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाओं के आधार पर लगातार संघर्ष करने के जरिए एक बहुत ही सामान्य अवस्था से शुरू करके अपने आपको असाधारण स्तर तक ऊपर उठा पाना सम्भव है।

1950 से मैं पार्टी में हूं। मैंने इतने सारे शहीदों की मौत देखी है, इतने सारे युवा कामरेडों के गुजर जाने का मैं साक्षी हूँ – मैं खुद से पूछता हूँ कि ऐसी कितनी मौतों को मुझे और देखना पड़ेगा! लेकिन फिर मैं उस प्रतिज्ञा के शब्दों को याद करता हूँ और ताकत बटोरता हूँ जो प्रतिज्ञा कॉमरेड स्टालिन ने महान कॉमरेड लेनिन के निधन पर ली थी।। महान स्टालिन के निधन के बाद कॉमरेड माओ त्से-तुंग ने कहा था, "दुःख को ताकत में बदल डालो।" और मुझे कॉमरेड सुबोध बनर्जी के निधन के बाद कॉमरेड शिवदास घोष के कहे ये शब्द याद आते हैं, ".. राजनीति एक उच्च हृदयवृत्ति है। यह एक तरह जहां कोमल है, दूसरी तरफ इसमें अंतर्निहित है कठोर वास्तविकता, सख्त अनुशासन, और कड़ी कर्तव्य परायणता। शोक के कारण हमारा काम रुक नहीं सकता है। बाहरी रूप से, इस राजनीति का आचरण इतना हृदयहीन दिखाई देता है। लेकिन यह जो जितना भी निष्ठुर दिखता है, उसमें दुख के वास्तविक अहसास का तात्पर्य निहित है . .. यहां तक कि अत्यंत प्रियजन की मौत और बड़ी भारी क्षति के समय भी, गहरे हृदयावेग की घटना घट जाने पर भी वे अपने कर्मक्षेत्र में अपने फर्ज को भूल नहीं सकते।" हर बार जब कभी मुझे किसी कॉमरेड की मौत का सामना करना पड़ता है, तो मैं महान नेताओं की इन शिक्षाओं को याद करता हूँ और ताकत प्राप्त करता हूँ। मैं आपको उसी तरह ताकत बटोरने को कहूँगा। जब हम वहाँ नहीं होंगे, तो आपको इन शिक्षाओं के आधार पर आगे बढ़ना होगा। मैं यहाँ समाप्त कर रहा हूँ।

इन्कलाब जिन्दाबाद!

कॉमरेड प्रणती भट्टाचार्य लाल सलाम!

सर्वहारा के महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष लाल सलाम!

R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2018-20
Posting at New Delhi PSO on 7–8 and 22–23 of every month, Fortnightly, Date of Publication : July 5, 2018

कॉमरेड प्रणती भट्टाचार्य की स्मृति सभा आयोजित

कोलकाता : एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) की केंद्रीय कमेटी और पश्चिम बंगाल राज्य सचिवमण्डल की सदस्य और पार्टी की पुरुलिया जिला सचिव कॉमरेड प्रणती भट्टाचार्य का कलकत्ता हार्ट क्लिनिक और अस्पताल में 23 मई को निधन हो गया। 4 जून को हावड़ा के शरत सदन में पार्टी की केंद्रीय कमेटी के आह्वान पर उनकी स्मृति सभा आयोजित की गई। पूरे राज्य से आये हजारों पार्टी कार्यकर्ताओं, हमदर्दों और समर्थकों ने सभा में भाग लिया। मुख्य वक्ता पार्टी के महासचिव कॉमरेड प्रभास घोष थे। केंद्रीय कमेटी सदस्य, राज्य सचिव कॉमरेड सौमेन बसु ने सभा की अध्यक्षता की। पार्टी के पोलिट ब्यूरो के सदस्य कॉ. रंजीत धर, कॉ. असित भट्टाचार्य भी उपस्थित थे। सभा में केन्द्रीय कमेटी द्वारा दी गई श्रद्धांजलि कॉ. सौमेन बसु ने पढ़ कर सुनाई। बांग्लादेश समाजतात्रिक दल (मार्क्सवादी) के महासचिव, कॉ. मुबीनुल हैदर चौधरी द्वारा प्रेषित श्रद्धांजलि समाजतांत्रिक छात्र फ्रंट की अध्यक्ष कॉ. नाईमा खालेद मणिका ने पढ़ी। सभा शुरू होने से पहले मीटिंग हॉल के बाहर कॉ. प्रणती भट्टाचार्य की तस्वीर पर विभिन्न जिलों और जनसंगठनों के नेताओं ने माल्यार्पण किया। मंच पर रखी उनकी तस्वीर पर माल्यार्पण कर पार्टी के महासचिव कॉ. प्रभास घोष सहित पोलिट ब्यूरो के सदस्यों और केंद्रीय कमेटी के सदस्यों ने श्रद्धांजलि दी। पार्टी के झारखंड के राज्य सचिव कॉ. रॉबिन समाजपति और बिहार राज्य सचिव, कॉ. अरूण कुमार सिंह ने भी पुष्पांजलि अर्पित की।

शरणार्थियों के मानवाधिकारों का हनन ...

(पृष्ठ 1 का शेष)

दोहरायी और घुसपैठियों को वापस उन्हीं स्थानों पर भेजने की धमकी दी जहां से वे किसी भी कानूनी प्रक्रिया के बिना आए थे।

कॉ. प्राण शर्मा ने कहा कि अपनी चरम अवस्था साम्राज्यवाद में पहुंच कर पूंजीवाद अपने गहन बाजार संकट के दौर में उन मानवतावादी मूल्यों को भी तेजी से त्याग कर रहा है जिनका अनुसरण उसने एक समय किया था। उन्होंने कहा कि यह वैश्विक पैमाने पर उभरी एक ऐसी घटना है जिसका प्रतिरोध पूरी दुनिया भर के मजदूरों और प्रगतिशील लोगों द्वारा करने की जरूरत है। विश्व पूंजीवादी- साम्राज्यवादी व्यवस्था आज समाज की समस्याओं को हल करने में सक्षम नहीं है और इस प्रकार वह अंतर्राष्ट्रीय शांति व प्रगति में बाधा बन गई है।

बहादुरगढ़ (हरियाणा) : 24 जून को एआईयूटीयूसी और ऑल इण्डिया किसान खेत मजदूर संगठन की बहादुरगढ़ इकाइयों के कार्यकर्ताओं ने दुनियाभर में करोड़ों शरणार्थियों के पुनर्वास की मांग बुलंद की। किसान-मजदूरों ने शहर में प्रदर्शन कर हिंसा व उत्पीड़न के लिए जिम्मेवार पूंजीवादी-साम्राज्यवादी देशों का कड़ा विरोध किया। पिछले दिनों मैक्सिको से अमेरिका में शरण लेने वालों को गिरफ्तार कर उन्हें ट्रम्प प्रशासन द्वारा जेल में डालने और बच्चों को उनके माँ-बाप से जबरन छीनकर अलग पिंजरों में बंद करने की दुनिया भर में निंदा की गई है। मजदूर-किसानों ने ट्रम्प-प्रशासन के इस अमानवीय क्रूरता का सख्त विरोध किया।

एआइकेकेएमएस के प्रदेश सचिव कॉ. जयकरण मांडौठी ने कहा कि कम से कम 698 बच्चों को उनके मां बाप से छीनकर कई दिन तक अमानवीय हालत में रखा गया। सीरिया से एक करोड़ 10 लाख शरणार्थी घर-बार व देश छोड़ चुके हैं। कांगो देश से युगांडा में भारी संख्या में लोग विस्थापित हुए हैं। फिलिस्तीन देश आज खुद ही शरणार्थी बन गया है। बर्मा (म्यामांर) से रोहिंग्या बहुत ही अमानवीय हालत में पड़ोसी देशों में मारे-मारे फिर रहे हैं। श्रीलंका, तिब्बत व अन्य पडोसी देशो से तीन लाख शरणार्थी भारत में हैं। इराक, अफगानिस्तान से भी लाखों लोग विस्थापित हुए हैं और नारकीय जीवन जीने पर मजबूर हैं। यह सब अमेरिका सरीखे साम्राज्यवादी देशों की लूट खसोट का परिणाम है। इनके द्वारा दूसरे देशों में थोपे गए युद्धों व हस्तक्षेपों के खिलाफ शांतिप्रिय व न्यायप्रिय लोगों को दुनिया भर में आवाज उठानी चाहिए। इनसे विस्थापित होकर वर्ष 2017 में 6 करोड़ 50 लाख लोग शरणार्थी बनें हैं जो अत्यधिक है। एआईयूटीयूसी व एआईकेकेएमएस ने इनके पुनर्वास की मांग बुलंद की।

बैंगलोर (कर्नाटक) : अमेरिका मेक्सिको सीमा पर अमेरिका द्वारा हजारों शरणार्थी बच्चों को उनके माता-पिता से जबरन अलग कर कैदखानों में डालने के खिलाफ 23 जून को कर्नाटक के बैंगलोर में एआईडीएसओ, एआईडीवाईओ और एआईएमएसएस ने विरोध प्रदर्शन किया।

बैंगलोर

बहादुरगढ़ : प्रदर्शनकारियों को संबोधित करते हुए कॉ. सत्यवान

भारत में धन-दौलत बढ़ रही है, बढ़ रहे हैं भुखमरी के शिकार लोग भी

न्यू वर्ल्ड वेल्थ एंड सीईओ वर्ल्ड मैगजीन की रिपोर्ट के मुताबिक, दुनिया के पहले दस सबसे अमीर देशों में भारत का छठा स्थान है।

2017 में भारत की कुल संपत्ति 8,230 अरब डॉलर थी। अमेरिका 64 हजार 584 अरब डॉलर के साथ पहले स्थान पर था। फिर चीन, जापान, ब्रिटेन और जर्मनी थे। इसके बाद भारत छठे स्थान पर था।

कुल संपत्ति की मात्रा किसी भी देश के नागरिकों की देनदारी को छोड़कर निजी संपत्ति को संदर्भित करती है, जिसमें अचल संपत्ति, नकदी, व्यापार संपत्तियां और इक्विटी शामिल हैं। बेशक, सरकारी संसाधन इसमें शामिल नहीं हैं। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि धन बढ़ने के मामले में भारत का स्थान सबसे ऊपर है। जहां 2016 में भारत की कुल संपत्ति 6,584 अरब डॉलर थी, वर्ष 2017 में यह बढ़कर 8,230 अरब डॉलर हो गई। इसका मतलब है 25 प्रतिशत की वृद्धि। दूसरी तरफ, पिछले दस वर्षों (2007 से 2017) में भारत की कुल संपत्ति 3,165 अरब डॉलर से बढ़कर 8,230 अरब डॉलर हो गई है, अर्थात् 160 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

इस रिपोर्ट के मुताबिक, भारत में ऐसे 3,30,400 लोग रहते हैं, जिनकी कुल संपत्ति की मात्रा 1 अरब (बिलियन) डॉलर या उससे अधिक है। ऐसे अमीर लोगों की सबसे बड़ी संख्या अमेरिका में है – 50 लाख 47 हजार 400 लोग। भारत में करोड़पतियों की संख्या 20 हजार 730 है, जो दुनिया में सातवें नम्बर पर है। लाख करोड़पतियों की संख्या के मामले में भारत तीसरे नम्बर पर है। अमेरिका और चीन के बाद ही इसका स्थान है।

अगर देश के बहुसंख्यक लोगों को दो जून रोटी मिलनी भी दुष्कर हो, तो देश की कुल संपत्ति इतनी अधिक हो जाने से क्या होगा। इंटरनेशनल फूड पॉलिसी रिसर्च इंस्टीट्यूट की रिपोर्ट के मुताबिक, वर्ष 2017 में भारत भूख इंडेक्स के पैमाने से 119 देशों में 100वें स्थान पर है।

एशिया में केवल अफगानिस्तान और पाकिस्तान ही भारत से निचले स्थान पर हैं, भारत के पड़ोसी देशों, म्यांमार, श्रीलंका, नेपाल, चीन और बांग्लादेश का स्थान भी भारत से ऊपर है। इससे पहले 2014 में भारत का स्थान 76 देशों में 55वें नम्बर पर था। रिपोर्ट में कहा गया है कि कुपोषण के मामले में भारत की हालत गंभीर है। भारत की इस शोचनीय स्थिति का कारण बच्चों में बड़ा भारी कुपोषण है। भारत के बच्चों में, 5 साल और उससे कम उम्र के 20 प्रतिशत से अधिक बच्चों का वजन उनकी ऊंचाई की तुलना में बहुत ही कम है।

इससे, यह समझा जाता है कि यह अपार धन-दौलत कुछ पूंजीपतियों, बड़े-बड़े व्यापारियों के हाथों में जमा हो गई है, जिनकी संख्या देश की कुल आबादी की तुलना में बहुत ही छोटी है। देश के अधिकांश आम आदमियों को यह धन-दौलत बरतने को नहीं मिलती है, जबकि खून-पसीना बहा कर की गई उनकी मेहनत से ही यह तमाम धन-दौलत पैदा हुई है।

इस पूंजीवादी देश में पूंजीपति वर्ग की राजनीतिक प्रबंधक सरकार और सत्ताधारी पार्टी पूंजीपतियों के हितों की रक्षा और उनके विकास को ही देश के विकास के रूप में प्रचार किया करती है। आम लोग इनके झूठे वादों से बहकाये जाते हैं और कभी पूंजीपति वर्ग की अमुक पार्टी को और कभी तमुक पार्टी को सत्ता में बैठाते रहते हैं। इसलिए एक के बाद दूसरी सरकारों की अदला-बदली तो होती है, लेकिन आम लोगों के जीवन की समस्याएं हल नहीं होती हैं।

दिल्ली ट्रेड यूनियनों का संयुक्त आह्वान

दिल्ली में 20 जुलाई को श्रमिक हड़ताल सफल करें

नई दिल्ली : एआईयूटीयूसी, इंटक, एटक व सीटू सहित दिल्ली की 11 ट्रेड यूनियनों ने केंद्र सरकार व दिल्ली सरकार की मजदूर-कर्मचारी विरोधी नीतियों के खिलाफ 20 जुलाई को दिल्ली मे एक दिन की श्रमिक हड़ताल की घोषणा की है। 27 जून को दिल्ली के सरकारी-गैरसरकारी, ठेका व आशा-आंगनवाड़ी सहित हजारों मजदूर-कर्मचारी शहीद भगत सिंह पार्क में एकत्र हुए। वे दिल्ली सचिवालय की ओर बढ़े, तो पंलिस ने रोक दिया। जुलूस वहीं पर सभा में तब्दील हो गया। एक 4 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल मांगपत्र व हड़ताल का नोटिस देने के लिए भेजा गया। इसमें एआईयूटीयूसी दिल्ली राज्य कार्यालय सचिव कॉ. विजय कुमार भी शामिल थे। साथ ही भवन निर्माण, स्वास्थ्य कर्मचारियों एनपीएचए, कैट्स एम्बुलेंस और एमसीडी एएनएम व एलएचवी स्टाफ ने भी अपने-अपने ज्ञापन भेजे।

सभा को एआईयूटीयूसी के दिल्ली राज्य अध्यक्ष कॉ. हरीश त्यागी, एटक से धीरेंद्र शर्मा, सीटू से वीरेन्द्र गौड़, इंटक से ऋषि पाल, एक्टू से सन्तोष राय, मैक से सन्तोष कुमार आदि श्रमिक नेताओं ने सम्बोधित किया।

Printed and published by Com. Satyawan on behalf of the Central Committee of the Socialist Unity Centre of India (Communist) and printed at M/s Balaji Offset Printers, 315/21, Shahzada Bagh, Daya Basti, Delhi and published at 3A/38, WEA, Satnagar, Karol Bagh, New Delhi-110005. Editor: Com. Satyawan, Member, Central Committee, SUCI(C)."
Email: sarvaharadrishtikon@gmail.com , sarvaharadrishtikon@yahoo.com फोन नं. : 011-25726631, 9868350503